

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV (Maharashtra): Sir, I want to make a submission.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGDISH DESAI): Please sit down. I am not going to allow any other things. Now, Bill to be introduced.

THE SATI PREVENTION BILL, 1987..

DR. BAPU KALDATE (Maharashtra): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for the prevention of practice and glorification of sati and for matters connected therewith or incidental thereto.

The question was put and the motion was adopted.

DR. BAPU KALDATE: I introduce the Bill.

THE CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL, 1987 (Insertion of new article 17A etc.) ...

SHR MURLI DHAR CHANDRAKANT BHANDARE (Maharashtra): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitution of India.

The question was put and the motion was adopted.

KANT BHANDARE: I introduce the Bill.

THE PREVENTION OF MISUSE OF RELIGION AND RELIGIOUS INSTITUTIONS BILL, 1987

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE (Maharashtra): I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for the prevention of misuse of religion and religious institutions, and for that purpose to provide for effective control of properties and places of worship of all religions, certain disqualifications in the Representation of the People Act, 1951 and for matters connected therewith and incidental thereto.

The question was put and the motion was adopted.

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: I introduce the Bill.

THE NATIONAL HONOUR AND INTEGRITY (PROTECTION) BILL, 1987

श्री शिव कुमार मिश्र (उत्तर प्रदेश): मैं प्रस्ताव करता हूँ कि :

“राष्ट्रीय गौरव और अखंडता के संरक्षण का उपबन्ध करने वाले विधेयक पर विचार किया जाये।”

उपसभाध्यक्ष महोदय, मुझे प्रसन्नता है कि आज मुझे इस महत्वपूर्ण “राष्ट्रीय गौरव और अखंडता (संरक्षण) विधेयक” को यहां प्रस्तुत करने का अवसर मिला है। इसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ। सबसे पहले कि मैं यह निवेदन करना चाहूँगा कि इस विल को यहां लाने की जरूरत क्यों पड़ी? हाल ही मेरनेक लोगों द्वारा अनेक अवसरों पर राष्ट्रीय ध्वज का, राष्ट्रीयगान का, संविधान का अपमान किया गया। ये हमारी अमृत्यु निधि हैं और इसकी हर कीमत पर रक्षा करना हमारा दायित्व है। इसलिए यह आवश्यक है कि ऐसी कार्यवाहियों को रोका जाय। इसके लिए एक विधेयक स्वीकार किया जाये और उन लोगों को जोकि इस प्रकार के राष्ट्र-विरोधी कार्य कर रहे हैं, उन्हें दण्डित किया जाय। पेशतर इसके कि मैं और कुछ कहूँ, मैं यह कहना चाहता हूँ कि भारतवर्ष एक महान देश है। इसमें भिन्न-भिन्न जातियों, भिन्न-2 संप्रदाय, भिन्न-भिन्न भाषाओं के बोलने वाले रहते हैं। सदियों से रह रहे हैं और आपस में सांप्रदायिक सद्माव उनमें बना रहा है। एक दूसरे के साथ भाईचारे का बर्ताव करते रहे हैं। हमारे संतों ने हमारे महापुरुषों ने, हमारे बुजर्गों ने बराबर यही हमको संदेश दिया है, चाहे वे कवीर हों, गुहानानक हों, तुलसी हों भभी ने इसी संस्कृति और इसी गंगा-जननी तहजीब को पेश किया है जिसका कि विश्व में कोई सानी नहीं है। परन्तु अंग्रेजों ने हमारे देश में फूट डालो और राज करो कि नीति अर्थात् और अंग्रेजी दासता से मक्कित पाने के

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने सन् 1857 में बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में स्वतंत्रता आदोलन प्रारम्भ किया था। यद्यपि अंग्रेजों ने हमारे इस प्रयास को विफल कर दिया था, लेकिन हमारे पुराने महापुरुषों ने, देशभक्तों ने—लोकमान्य बाल गगाधर तिलक, बाबा विपनचन्द्र पाल और लाला लाजपतराय जैसे स्वतंत्र योद्धाओं ने इस देश में फिर अंग्रेजी दासता में छठकारा पाने के लिए जनता को संगठित किया और बड़ी कुरानी दी। महात्मा गांधी ने अपना अस्थायोग आदोलन शुरू किया। उस जमाने में सांप्रदायिक सद्भाव बहुत था। यह आज की बात नहीं है। यह हमेशा से रही है। हमने देखा है। वह दिन भी था जब जामा मस्जिद में भाषण देने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी को आमंत्रित किया गया था और दिल्ली में अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन की स्वागत समिति की अध्यक्षता के लिए हकीम अजमल खा को आमंत्रित किया गया था। गाय का बिला उनके सीने पर लगा हुआ था। हमने हमेशा इसी तरीके से हमारे यहा हिन्दू मुस्लिम, सिख सभी ने भाईचारे के रूप में शामिल होकर आजादी की लड़ाई लड़ी। हम लोगों ने गाने गाए थे, “सिख, हिन्दू, मुसलमान एक रहें, भाषा-भाषा में रशमोरिवाज रहे, गुह ग्रथ, पुराण, कुरान रहे, मेरी संध्या पूजा नमाज रहे!” लेकिन जैसा कि मैंने अभी कहा अंग्रेजों ने फूट डालो, राज करोवाली नीति को अपनाया। जब मुगल हमारे यहाँ आए तो वे फारसी लेकर आए और उस सबने कबूल किया। अंग्रेज आए, अंग्रेजी लेकर और अंग्रेजी को सबने कबूल किया। न फारसी का कोई विरोध हुआ और अंग्रेजी का लेकिन मैं यह जाना चाहता हूँ कि आज हिन्दी का इतना विरोध क्यों है? इस देश में 80 करोड़ जनता की एक तो संपर्क भाषा रहेगी? हमारी सरकार और हमारे नेताओं ने बार-बार इस बात के लिए आश्वासन दिया है कि अंग्रेजों जब तक लोग चाहेंगे, सूबों में रहेंगी और हिन्दी किसी के ऊपर थोपा नहीं जाएगा। लेकिन मैं जाना चाहता हूँ कि क्या अनंतकाल तक हम लोग अंग्रेजी को बनाए रखेंगे? क्या

हमारी कोहें संपर्क भाषा होगी? मैं चाहूँगा कि हमारी जो 14 भाषाएं हैं, उनमें से भी अगर कोई संपर्क भाषा का स्थान ले सकती है तो उस बात को देखा जाए। लेकिन आज हम देखते हैं कि कही राष्ट्रीय झंडे जलाए जाते हैं, कही हमारे राष्ट्र-गान का बहिष्कार किया जाता है।

कही हमारे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस का बहिष्कार किया जाता है और इस संवंध में मैं तमिलनाडु की सरकार की सराहना करूँगा, प्रशंसा करूँगा कि उन्होंने बहुत सहत कदम उठाया और जिन लोगों ने ऐसा किया उन को दंडित किया। मैं अधिक न कह कर सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि इस को स्वीकार करना चाहिए और सभी दलों के लोगों से और सरकार से मैं इस बात के लिये प्रार्थना करूँगा कि हमारे इस विल को जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है और आज की स्थिति में बहुत आवश्यक है, स्वीकार किया जाय। इस में जो प्रावधान हैं उन में स्पष्ट कहा गया है कि ऐसे राष्ट्र-विरोधी कार्यों में मैं जो लोग लिप्त हैं उन को कठोर दंड दिया जाय। इस की व्यवस्था होनी चाहिए। तमिलनाडु की सरकार ने जो उदाहरण पेश किया है ऐसा सभी राज्यों में होना चाहिए और ऐसा हमारी सरकार की भी करना चाहिए। हम कब तक इस के लिये आंखे मुंद कर देखते रहेंगे और अगर इस प्रकार की चशमापोशी की गयी और कोई महत कदम नहीं उठाया गया तो स्थिति बहुत नाजुक हो जायगी और विधान-कारी शक्तियों और अलगाववादी शक्तियों को प्रोत्साहन मिलेगा। इन शब्दों के साथ मैं अपने इस प्रस्ताव को शर्ते करता हूँ।

The Question was proposed.

श्री बी० सत्यनारायण रेडी (आंध्र प्रदेश) : मिश्र जी ने जो विधेयक प्रस्तुत किया है मैं उस का समर्थन करता हूँ।

श्री कल्पनाथ राय (उत्तर प्रदेश) : आप हिन्दी में बोल रहे हैं इस का मैं स्वागत करता हूँ।

श्री बी. सत्यनारायण रेडी : जिस दंग मे मिश्र जी ने इस विधेयक पर जो अपने विचार इस सदन मे प्रकट किये वह सभी लोगो को मान्य हैं और मैं नहीं समझता कि हिन्दुस्तान का कोई व्यक्ति इस विचार से अलग होगा। मारे भारत के लोग किसी हिस्थे मे भी क्यों न हो, दिल्ली मे हो या उत्तर प्रदेश मे हों, विहार मे हो या आध्र प्रदेश मे हों, तपितनाडु मे हों या केरल मे हो या काश्मीर या नागालैंड मे हो, वहां के रहने वाले सभी भारतीय हैं, हिन्दुस्तानी हैं, और वे सब हिन्दुस्तान की एकता और हिन्दुस्तान की आजादी का यथ रखना चाहते हैं। अपने जानते हैं कि कई सालों तक हिन्दुस्तान दूसरों के अधीन रहा। यहां अंग्रेजों का राज रहा। बाहर से कई जातियों का आक्रमण हुआ। इस देश पर और यहां के लोगों ने काफी मुसीबते सही। लेकिन एक समय आया जब हिन्दुस्तान के लोगों मे जागरूति पैदा हुई और उन्होंने यह फैसला किया कि हिन्दुस्तान को स्वतंत्र बनाना है, आजाद बनाना है। इस मे कितने ही लोगों ने, जल्द ही ल किसी पार्टी के हों या न हों, बहुत से लोगों ने इस आजादी के आंदोलन मे हिस्सा लिया और महात्मा गांधी की रहनुमाई मे, उन के नेतृत्व मे कितने ही लोग जेल गये, कितने ही लोगों ने गिरफ्तारिया दी, कुर्वानियां दी और उन्होंने कभी नहीं सोचा कि आगे जा कर उन को मंत्री बनना है या किसी असेम्बली का सदस्य बनना है। उन के सामने एक ही ध्येय था—भारत की आजादी। इन्हीं बड़ी कुर्वानी क्यों की गयी? यह इस लिये कि हिन्दुस्तान मे जो गरीब है, जो परेशन है, उस का उद्धर हो। हिन्दुस्तान के लोग अपना सिर ऊचा उठा कर आगे जायें और जो मुसीबतें हैं इस देश के अदर, वे दूर हों। क्योंकि जो विदेशी आक्रमण हुए, और अंग्रेजों के राज के दौरान जो यहां के लोगों की आर्थिक लृट हुई, यहां के गरीब और अनपढ़ लोगों को जो मत्तया गया उस सब का नतीजा हुआ कि आज भी हम इस मे फंसे हुए हैं। अभी प्रस्ताव के मूवर ने बतलाया है कि अंग्रेजों की यह नीति रही की फूट डालो और ढकुमत करो। वही बात अब भी जारी है कि

किसी न किसी रूप मे। इसे खत्म करना है। आज सदन मे कहना पड़ता है कि आज हिन्दुस्तान को आजाद हुए 40 साल हो गये लेकिन सदन मे जब कार्यवाही चलती है तो वह भारत की किसी भाषा मे नहीं चलती। जाम के सारे हमारा मिर जक जाता है। जो कार्यवाही है वह तो हिन्दुस्तान की किसी भाषा मे नहीं सुनाई जाती है, अंग्रेजी मे सुनाई जाती है। इसको हमको यत्पर करना है। इसकी तरफ संजीदगी से हमे सोचना है। मरकार को भी सोचना है और लोगों को भी सोचना है। यह सही है कि कुछ प्रान्तों मे इसने दिक्कतें आएंगी, वहां पर हिन्दी मे काम करने मे कठिनाई होगी। लेकिन वे तमिल मे, तेलुगु मे, मलयालम मे, कश्मीरी मे अपना कामकर सकते हैं। किसी भी भारतीय भाषा मे यह किया जा सकता है लेकिन कार्यवाही अंग्रेजी मे नहीं होनी चाहिये इस तरह से धीरे-धीरे हिन्दुस्तान की भाषाएं उस स्तर पर पहुच जाएंगी कि हम अपनी भाषाओं मे काम कर सकते हैं।

महोदय कुछ लोगों का तर्क यह है कि जो टैन्नोलोजी के शब्द हैं या साइंस के शब्द है, वे हमारी भाषाओं मे नहीं हैं, तो भाषा के शब्दों को हम उसी रूप मे अपनाएं, लेकिन अपनी भाषा मे उनका प्रयोग करें, चीन, जापान, रूस आदि देशों ने क्या अपनी भाषाओं के माध्यम से तरकी नहीं की है? उन देशों ने काफी तरकी की है। अमरीका के बराबर वे पहुच गये हैं। जापान हर तरह से आगे बढ़ा तूक्रा है इंडस्ट्रीज बगरह मे। इसी तरह मे चीन भी, उसका कारोबार अपनी भाषा मे होता है। तो यह हमको सोचना है कि हमारा राष्ट्रीय गौरव और हमारी प्रतिष्ठा कैसी बनी रहेगी। यह सरकार को ही नहीं सोचना है। लोगों को भी सोचना है। इसकी जिम्मेदारी सरकार पर ही नहीं है, लोगों पर भी इसकी जिम्मेदारी है। हिन्दुस्तान के सभी लोगों पर इसकी जिम्मेदारी है।

श्रीमन्, मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि जहां यह जिम्मेदारी सरकार

की है और लोगों की है, वहां यह जिम्मेदारी संस्थाओं की भी है। हाल के ही कुछ वर्षों की एक घटना मुझे याद है। मैंने पढ़ा और मझे यह जानाशारी प्राप्त करके बड़ा रंज हुआ कि कुछ माल पहले हमारे देश में कालिदास समारोह उज्जैन में हुआ। उस समारोह में कालिदास समारोह उज्जैन में हुआ। उस समारोह में कालिदास समारोह में जब रूस का प्रतिनिधिमंडल आए और रूस का भी एक प्रतिनिधिमंडल आया। उसका कालिदास समारोह में जब रूस का प्रतिनिधिमंडल उज्जैन पहुंचा तो उनको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कालिदास समारोह के जो कार्य-ता थे, सम्मेलन को चलाने वाले थे, उन्होंने कार्यवाही अंग्रेजी भाषा में शुरू की। रूस के प्रतिनिधिमंडल ने फौरन खड़े होकर कहा कि इतनी दूर से, रूस से भारत और यहां भी उज्जैन में अंग्रेजी में कालिदास को सुनने के लिए नहीं आए हैं। हाँ कालिदास की जुबान में सुने के लिए आए हैं, हाँ की लीदास की भाषा में सुना चाहते हैं। यह हमारे लिए कितनी सर्वे की बात है? रूस वाल बोले कि आप अपनी भाषा में काम करो, संस्कृत में बोलो या भारत की किसी भाषा में। तो मेरे कहने का मतलब यह था कि राष्ट्रीय गौरव तब बढ़ेगा जब हम अपनी भाषाओं में, अपनी संस्कृति को, अपनी चीज़ को आगे बढ़ाये और उसके गौरव को बढ़ाये। नहीं तो काया गौरव हमको मिल सकता है?

अभी मिश्र जी ने चीन का उदाहरण दिया यह गलत बात है। हमारी विचारधारा कुछ भी हो लेकिन एक दूसरे को समझने में, बहस में, बातचीत से यह तथ की जा सकती है। यह प्रजातंत्र है। इसमें रट घसौट या हिंसा की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। गलत रास्ते से व्यवस्था को चलाने का या बदलने का तरीका नहीं अपनाना चाहिए। यह स्पष्ट बात यहां पर है। मैं यह मानता हूँ कि संविधान की जो प्रतिया है वह हर भाषा में हो। हिन्दी को राष्ट्रभाषा माना गया है, इसे आप लिक भाषा कहे या कुछ भी कहे लेकिन संविधान में इसे राष्ट्र भाषा माना गया है। इसके साथ-साथ हिन्दुस्तान की जितनी भाषाएँ हैं, चाहे तेलुगु हो, मलयालम है, तमिल है, कन्नड़ हो, बंगला हो, कश्मीरी हो, इन-

सभी भाषाओं का मान, सम्मान होना चाहिए, सभी भाषाओं को उन्नति होनी चाहिए, सभी भाषाओं की तरकी होनी चाहिए। हमारे संविधान का अनुवाद हिन्दुस्तान की सभी भाषाओं में होना चाहिए। यह एक बड़ा देश है, यहां पर करोड़ों लोग हैं और यहां पर कई तरह की भाषाएँ बोली जाती हैं और वे अपनी भाषा में अपनी विचारधारा रखना चाहते हैं। संविधान की कायियां न सिर्फ़ अंग्रेजी और हिन्दी में उपलब्ध हो बल्कि देश की सभी भाषाओं में उपलब्ध रहनी चाहिए।

दूसरी बात यह है कि गौरव बढ़ाना हमारे हाथ में है, हमारी सरकार के हाथ में है, लोगों के हाथ में है। सरकार कोई काम अपने हाथ में लेती है तो बड़े बेहुदा ढंग से अपना काम शुरू करती है। यह बड़े अफसोस की बात है। सरकार को सोचना चाहिए। सत्ता में कोई भी पर्दी आ सकती है। आज आप बैठे हैं कल दूसरी पार्टी आ सकती है, फिर तीसरी आ सकती है। प्रजातंत्र में यही होता है। जो भी पार्टी सत्ता में हो, केन्द्र में हो या राज्य में हो, उसका यह काम है कि जो लोगों की समस्याएँ हैं, मुरीदों हैं उनको समझे और उनका समाधान करे। मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ कि यह बिल मेरे सामने है, पता नहीं यह अनुवाद अंग्रेजी में है या मूल हिन्दी में ही है। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद है या हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है।

श्री मोर्जा ईशावंश (गुजरात)
अंग्रेजी से ही होता है।

श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी : मेरा कहना यह है, मैं पहले भी कह चुका हूँ इस मदन में जब भी किसी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद हो-चाहे वह अंग्रेजी से हिन्दी में हो या हिन्दी से अंग्रेजी में हो या किसी और हिन्दुस्तान की भाषा में हो जो अनुवाद करने वाली कमेटी है या व्यक्ति है, मुझे नहीं मालम कौन है, चाहे इस बिल का अनुवाद हो या दूसरी किताबों का अनुवाद हो या कस्टोट्यशन का अनुवाद हो, मेरा कहना

[श्री बी. सत्यनारायण रेड्डी]

वह है कि वे अनुवाद करने वाले सिर्फ अंग्रेजी भाषा के केवल जानने वाले न हों, हिन्दी भाषा के केवल जानने वाले न हों, बल्कि हिन्दुस्तान की दूसरी भाषाओं का ज्ञान भी रखने वाले हों ताकि वह यह समझ सके कि दूसरी भाषाओं में इस शब्द का प्रयोग कैसे हो सकता है। सिर्फ एक ही किस्म का अनुवाद होता है। यहाँ मैं हिन्दी अच्छी तरह से पढ़ सकता हूँ। बोल सकता हूँ, लिख सकता हूँ। मैं किसी साल या कालिज में हिन्दी नहीं पढ़ा हूँ। मैंने वर में ही हिन्दी सीखी है। मैंने स्वयं कोशिश करके हिन्दी का अस्यास किया है, परीक्षाएँ दी हैं, पास की हैं। जब महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार मभा आरम्भ की उस समय एक छोटा सा लड़का था। पढ़ रहा था। किसी स्कूल में तो हिन्दी पढ़ाने का कोई प्रबन्ध नहीं था लेकिन मैंने खुद इस भाषा को सीखने का प्रयास किया और सीखा और परीक्षाएँ दी। मैं यह सरकार से निवेदन करना चाहता हूँ कि जो अनुवाद की कमेटी है उनमें दूसरी भाषाओं के ज्ञानने वाले लोग भी होने चाहिए।

लालिक उन शब्दों का प्रयोग जब 3.00 P.M. वे प्रनवाद कर्ते हों तो कर सके। यह जो हमारे पास हिन्दी की प्रति है, इस विद्येयक की प्रति है, जिनकी मातृ-भाषा हिन्दी है, उनसे भी इसके बारे में पूछें तो वे कहेंगे, यह हमारी समझ में नहीं आती है। मैं यहाँ पर देखता हूँ कि जिनकी मातृभाषा हिन्दी है वे भी अंग्रेजी की प्रति क्यों मांगते हैं तो वे कहते हैं कि यह हिन्दी हमारी समझ में नहीं आती है। जब वह हिन्दी उनकी समझ में नहीं आती है जिनकी मातृभाषा हिन्दी है तो आप स्थिति को समझ सकते हैं।

मेरा दूसरा सुझाव यह है कि हमारे देश में जो भी काम हो वह हमारे देश के गौरव, प्रतिष्ठा और अखण्डता को किसी भी सूरत में धक्का न पहुँचाये। वह इस देश के गौरव, प्रतिष्ठा और अखण्डता की हिफाजत करे। हमने आजादी की लड़ाई

लड़ी। सन् 1942 के आनंदोलन के दिनों में मैं विद्यार्थी था, आठवीं क्लास का विद्यार्थी था। जब अंग्रेजों ने महात्मा गांधी और दूसरे नेताओं को किंवद्दि अम्बेन्ट के दौरान गिरफ्तार किया तो हमारे दिलों में भी जोश पैदा हुआ। हमारे दिलों में भी अंग्रेजों के खिलाफ भावनाएँ पैदा हुईं। हमने आवाज उठाई। कई। लोगों ने कामुक छोड़ दिये, जेलों में गये। हमारे देश के कई लोगों ने देश की आजादी के लिए अपनी कुर्बानी दी। वे अपना नाम बताया भी नहीं चाहते थे। कई किसानों और मजदूरों ने देश की आजादी के लिए अपनी कुर्बानी दी। इसलिए इस देश के गौरव, इस देश की एकता, अखण्डता को बनाये रखना। सब की जिम्मेदारी है सब का फर्ज है। जो प्रस्ताव आज सदन में रखा गया है, इसके पीछे देश की एकता और अखण्डता की जो भावना है, देश के गौरव की जिस भावना से यह यहाँ पर रखा गया है, इसका मैं सम्पूर्ण रूप से अनुमोदन करता हूँ। मुझे नहीं मालूम कि सरकार किस सूरत में इस प्रस्ताव को स्वीकार करेगी लेकिन इसके पीछे जो भावनाएँ हैं, उनका पालन होना चाहिए। उन भावनाओं का सरकार की तरफ से, जनता की तरफ से, सब की तरफ से पालन होना चाहिए।

श्री कल्पनाथ राय (उत्तर प्रदेश) : आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, श्री शिव कुमार मिश्र सदन में जो यह प्रस्ताव लाये हैं, मैं इसका तहे दिल से समर्थन करता हूँ। आज हिन्दुस्तान की आजादी को सबसे बड़ा खतरा प्रगत है तो वह भारत की राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को है। मुळक की एकता और अखण्डता को बचाना ही आज हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता है। साम्राज्यवादियों की साजिश के कारण एशिया के मुळकों का बट्टवारा हुआ। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, उत्तर कारिया, दक्षिण कोरिया, उत्तरी वियतनाम, दक्षिणी वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, चीन, फार्म्सा आदि देशों के रूप में साम्राज्यवादि ने एशियाई देशों के टकड़-टकड़े कर दिये। चालीस वर्षों की आजादी के बाद भी इस मुळक की भाषा अंग्रेजी है। जाहिर है कि हिन्दुस्तान की एकता और अखण्डता को सारी खतरा बना हुआ है। जब तक

अंग्रेजी भाषा हिन्दुस्तान मे कायम है, तब तक भारत की अखण्डता को खतरा बना रहेगा। लाई मैकाले ने जिसने अंग्रेजी शिक्षा नीति लागू की थी, उसने जो बात कही थी उमको हर हिन्दुस्तानी को याद रखना चाहिए ---

"We must do our best to form a class, which may be interpreter between us and the millions whom we govern a class of persons, Indian in blood, but English in taste and intellect."

अगर हिन्दुस्तानियों को सदैव गुलाम बनाकर रखना है तो उनकी भाषा को बदल दो, उनकी भाषा अंग्रेजी बना दो। आजादी के चालीस वर्षों के बाद भी हिन्दुस्तान के अन्दर भारत की संसद अंग्रेजी में चल रही है। दशक दीघाँओं में बैठे हुए लोग यह देखकर पार्लियामेंट को छोड़कर चले जाते हैं क्योंकि वह हमारे संसद सदस्यों की भाषा को नहीं समझते हैं। मैं बी सत्यनारायण रेडी जी को भारत माता की तरफ से बधाई देना चाहता हूं जो उन्होंने आंध्र प्रदेश के होते हुए भी यहां पर राष्ट्रभाषा में, मातृभाषा में अपना भाषण दिया। आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, भाषा का सवाल आजादी से जुड़ा हुआ है। जिस मुल्क की हुकूमत मुल्क की भाषा मातृ भाषा में नहीं चलेगी वह देश अपनी आजादी नहीं बचा सकता है। मुझे संसद में तेरह साल हो गये। यहां पर दुनिया के जितने भी राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री आये और यहां के सेन्ट्रल हाल में उन्होंने जो भाषण दिये, वह वह एशिया का हो, अफ्रीका हो, अमेरिका का हो, इंग्लैंड का हो, चाहे 5 लाख की आबादी वाले देश का हो, 10 लाख की आबादी वाले देश का हो, 1 करोड़ की आबादी वाले देश का हो, वहा के राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों ने अपनी मातृ भाषा में भाषण दिया। आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, गांधी जी बहुत दूरदर्शी थे। गांधी जी ने कहा था कि अगर हिन्दुस्तान की हुकूमत मेरे हाथ में आती है तो मै कलम की एक नोक से मातृ भाषा को भारत की राष्ट्र भाषा बनाऊगा। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस...

श्री राम अवधेश सिंह (बिहार) : राजीव गांधी हमेशा अंग्रेजी में ही बोलते हैं। .. (व्यवधान) ..

श्री कल्पनाथ राय आदरणीय उपसभाध्यक्ष (व्यवधान) ...

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश वेसाई) : इतना अच्छा भाषण हो रहा है और आप इस तरह बीच में बोल रहे हैं।

श्री राम अवधेश सिंह : यह शर्म की बात है कि हमारे प्रवानमंत्री कमी भी अपनी मातृ भाषा में नहीं बोलते हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश वेसाई) : आप बैठिये। आप जब बिल पर बोले... (व्यवधान) ..

श्री कल्पनाथ राय : आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज को, जिसमें हिन्दुस्तान के सभी वर्ग के लोगों का प्रतिनिधित्व था, दिल्ली चलो और जय हिन्द का नारा दिया तो उसके साथ उन्होंने यह भी कहा कि 'कदम कदम बढ़ाये जा खुशी के गीत गाये जा, जिदगी है कौम की कौम पे लुटाई जा।' नेताजी सुभाषचन्द्र बोस बगली थे ग्रीष्म बंगल उनकी मातृभाषा थी। गांधी जो गुजराती थे, गुजराती उनकी मातृभाषा थी। राजगोपालाचारी ने गांधी जी के नेतृत्व में दक्षिण भारत में हिन्दी के लिये आनंदोलन किया और कन्याकुमारी से काश्मीर तक तथा असम से लेकर गुजरात तक भाषा का आनंदोलन चला। गांधी जी ने कहा था कि जिस मुल्क की अपनी भाषा ही नहीं होगी वह मुल्क अपनी आजादी कैसे बचा सकता है। आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, जब मुल्क में हिन्दुओं की हुकूमत थी तो उस समय राजकाज की भाषा संस्कृत थी और जनता की भाषा पाली, अपब्रंश पाली और हिन्दी थी। उस समय संस्कृत जानने वाले कुछ मुठभीभर लोग हिन्दू राजे-रजवाड़ों की हुकूमत चला रहे थे। जनता की बोली अलग और राजा की बोली अलग। इसी-लिये हिन्दू राजाओं को बुरी तरह से विदेशी हमलावरों के सामने पराजय का मुंह देखना पड़ा और इस देश में विदेशियों की हुकूमत कायम हुई। जब इस मुल्क में मुगलों की हुकूमत कायम हुई तो राजकाल

[श्री कल्पनाथ राय]

की भाषा फारसी बनी जब कि जनता की भाषा हिन्दी उर्दू, पंजाबी, बंगाली थी। मुँगलई हुक्मत जब हिन्दुस्तान में आई उसने राजकाल की बोली फारसी बनाई जब कि जनता की बोली हुसरी थी। राजकाज की बोली, उनके जमाने में अलग रही और जनता की बोली अलग रही। इसी कारण बहादुर शाह जफर को, जो कि दिल्ली का बादशाह था, अंग्रेजों से मुकाबला करने पर गहरी पराजय के मुह देखना पड़ा। उसके बाद अंग्रेजी की हुक्मत इस देश में कायम हो गई। जब अंग्रेजी हुक्मत इस देश में कायम हुई तो उन्होंने राजकाज की भाषा को अंग्रेजी बनाया। कुछ मुट्ठीमर अंग्रेजी बोलने वाले लोगों ने, एक क्लेक्टर और एक एस-पी० एक जिले में होता था, जो मुट्ठीभर अंग्रेजी जानने वाले इन लोगों ने इस देश पर शासन किया। गांधी जी ने इस बात को समझ लिया था कि अगर इस मुल्क में लोक शाही को कायम करना है तो लोक भाषा लोक भोजन और लोक भवन के माध्यम से इस देश की आजादी की लड़ाई को लड़ना होगा। उसी तरह हमारे राष्ट्र के कवि श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा कि :—

“निज भाषा उभति अहै,

सब उभति को मूल ।”

बिना निजी भाषा के हम तरकी नहीं कर सकते, विकास नहीं कर सकते। हमारे भारत का संविधान बन वाले मनीषियों ने जो संविधान बनाया उस संविधान के अन्तर्गत हमारे देश का संविधान बनाने वालों ने कहा कि —

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC and to secure to all its citizens:

JUSTICE, social, economic and political; LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all;

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the Nation.

आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, धारा 343 में आकिंशियल लैचेज के विषय में लिखा है —

The official language of the Union shall be Hindi in Devanagari script. The form of numerals to be used for the official purposes of the Union shall be the international form of Indian numerals. (2) Notwithstanding anything in clause (1), for a period of fifteen years from the commencement of this Constitution, the English language shall continue to be used for all the official purposes of the Union for which it was being used immediately before such commencement:

Provided that the President may, during the said period, by order authorise the use of the Hindi language in addition to the English language and of the Devnagari form of numerals in addition to the international form of Indian numerals for any of the official purposes of the Union.

(3) Notwithstanding anything in this article Parliament may by law provide for the use, after the said period of fifteen years, of—

(a) the English language, or

(b) the Devanagari form of numerals, for such purposes as may be specified in the law.

धारा 344 में लिखा है कि—

(1) The President shall, at the expiration of five years from the commencement of this Constitution and thereafter at the expiration of ten years from such commencement, by order constitute a Commission which shall consist of a Chairman and such other members representing the different languages specified in the Eighth Schedule as the President may appoint, and the order shall define the procedure to be followed by the Commission. (2) It shall be the duty of the Commission to make recommendation to the President as to—

(a) the progressive use of the Hindi language for the official purposes of the Union;

(b) restrictions on the use of the English language for all or any of the official purposes of the Union;

(c) the language to be used for all or any of the purposes mentioned in article 348;

(d) the form of numerals to be used for any one or more specified purposes or the Union;

(e) any other matter referred to the Commission by the President as regards the official language of the Union and the language for communication between the Union and a State or between one State and another and their use.

(3) In making their recommendations under clause (2), the Commission shall have due regard to the industrial, cultural and scientific advancement of India, and the just claims and the interest of persons belonging to the non-Hindi speaking areas in regard to the public services.

(4) There shall be constituted a Committee consisting of thirty members, of whom twenty shall be members of the House of the People and ten shall be members of the Council of States to be elected respectively by the members of the House of the People and the members of the Council of States in accordance with the system of proportional representation by means of the single transferable vote.

(5) It shall be the duty of the Committee to examine the recommendations of the Commission constituted under clause (1) and to report to the President their opinion thereon.

(6) Notwithstanding anything in article 343, the President may, after consideration of the report referred to in clause (5), issue directions in accordance with the whole or any part of that report.

आदरणीय उपमंत्राध्यक्ष महोदय, धारा 345 में लिखा है—

Subject to the provisions of articles 346 and 347, the Legislature of a State may by law adopt any one or more of the languages in use in the State or Hindi as the language or languages to be used for all or any of the official purposes of that State.

उपमंत्राध्यक्ष महोदय, भारत के संविधान को बनाने वाली सभा ने यह कसम खार्ड धारा 343, 344 और 345 के माध्यम से कि 1950 से संविधान बनने के 15 साल तक भारत की लैंग्वेज अंग्रेजी रहगी और धीरे-धीरे अंग्रेजी का इस्तेमाल खत्म करते हुए, 1965 तक आते आते हिन्दी उसकी जगह ले लेगी। यह इन धाराओं का मतलब है। 1965 के बाद भारत की राष्ट्रभाषा, मातृभाषा हिन्दी को होना चाहिए, मातृभाषा को, मैं हिन्दी नहीं कहता हूँ, मातृभाषा को होना चाहिए।

श्री राम अवधेश सिंह : राज भाषा ।

श्री कल्यन सराय : हां राज भाषा। लेकिन 1987 के बाद भी हम अपने मुल्क की मातृभाषा को राजभाषा नहीं बना सके हैं। यह एक बुनियादी प्रश्न है जिसके ऊपर भारत की पूरी संसद को बचार करना करना चाहिए। उपमंत्राध्यक्ष महोदय, शर्म और लज्जा तब आती है जब हिन्दी भाषा भाषी इलाके के लोग यहां पर अंग्रेजी बोलते हैं। तकलीफ तभी होती है। अगर हिन्दी भाषा भाषी इलाकों के, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और गुजरात आदे जितने हिन्दी भाषी इलाके के एम पी अपनी मातृभाषा में बोले तो जो हिन्दी है। जानते हैं वे हिन्दी सीखेगे लेकिन जब हम ही अंग्रेजी बोलते हैं तो वे क्यों हिन्दी सीखेगे ... (व्यवधान) या, बुनियादी सबाल है। भारत की आजादी भारत की एकता, भारत की अखंडता को ग्रगर खतरा है, आज सबसे बड़ा खतरा है तो इससे है। आज हिन्दुस्तान के सामने केवल रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या नहीं है आज भारत की एकता को सबसे बड़ा खतरा ग्रगर है तो इसलिए है कि हम आज तक अपने मुल्क की भाषा नहीं बना सके। आज मुल्क में सम्प्रदाय धर्म के मजहब के झगड़े खड़े किये जा रहे हैं मैं आपसं कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान में कमी जी हिन्दू और मुसलमान के बीच में लड़ाई नहीं रही, लड़ाई देशी और परदेशी के बीच रही। विदेशियों ने हिन्दुस्तान पर

[श्री कल्पनाथ राय]

हमला किया और देशियों ने उसका मुकाबला किया। मगर हिन्दुस्तान में सम्प्रदायिकता, फँडामेंटलिज्म आदि ताकते हिन्दू, मुस्लिम सिक्ख और ईसाइयों के, धर्म, मजहब और जाति के झगड़े उभारकर हिन्दुस्तान तोड़ना चाहती है। सन् 1526 में मुहम्मद बिन फ़ासिम ने हिन्दुस्तान पर हमला किया और देशियों ने उसका मुकाबला किया। विदेशी गजनी ने हमला किया और पूरे हिन्दुस्तान ने उसका मुकाबला किया (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : उनको शांति से बोलने दीजिए।

ओ कल्पनाथ राय : सन् 1526 से बाबर ने हिन्दुस्तान पर हमला किया। इब्राहीम लोदी की हुक्मत हिन्दुस्तान में थी, उसने और राणा सांगा की सेना ने विदेशी हमलावरों का मुकाबला किया, मगर नवी टेक्नालोजी से, नये हथियारों से सुभज्जित बाबर की सेना ने जो तोपखाने के साथ थी हिन्दुस्तान पर हमला करके उस पर विजय प्राप्त की। नादिरशाह ने, विदेशी ने हमला किया और देशियों को काटा, कत्ल किया। तैमूर लंग ने हमला किया और हिन्दू मुसलमानों का कत्ल किया तो हिन्दुस्तान में देशी और परदेशी के बीच लड़ाई रही है कभी हिन्दू और मुसलमानों में लड़ाई नहीं रही है।

सन् 1857 में जफर के नेतृत्व में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सब इकट्ठे होकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़े और जब जफर को गिरफ्तार करके जेल में अंग्रेजों ने डाल दिया तो अंग्रेज कमाड़र इन चीफ और उसकी मौत करने वाले हिन्दुस्तानी ने कहा :

‘हमदमो मे दम नहीं है,
खैर मारो जान की,
ऐ जफर बस हो चुकी है
शमशीरे हिन्दुस्तान की
ए जफर तुम क्या लड़ोगे
तुम हार चुके हो रण प्रागण में,
तुम हिन्दुस्तानी मुकाबला नहीं कर
सकते इन अंग्रेजों का।’

तो जफर ने जो जवाब दिया वह हम हिन्दुस्तानियों को याद रखता चाहिए :

“जिसे मे बू रहेगी जब तलक ईमान को हम हिन्दुस्तानियों मे बू रहेगी जब तलक ईमान की छत लग़ती है। तब होगा तग हिन्दुस्तान की जब तक हम हिन्दुस्तानी ईमानदार में देशभक्त है। जब तक हम राष्ट्रभक्त हैं जब तक मूलक के लिए मरना-मिटना जानते हैं तब तक हिन्दुस्तान का बाल भी बांका कोई नहीं कर सकता है। हम हिन्दुस्तानी गुलाम इसलिए दो रहे हैं कि हम बैरेमान दों गये हैं हम चोर हैं थग है राष्ट्रद्रोही दों चुके हैं इसलिए 1857 में हम गुलाम दों गये—यह कहा जफर ने।

आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, दिल्ली के अंतिम बादशाह जफर ने जब लड़ाई के मैदान में पानी मागा पीने के लिए, तो अंग्रेजों ने उसके चार बैठों की गर्दन काट कर उसके मामने रख दी और कहा “गद्दार, अपने बेटों का खन पिओ”। उस जफर को मांडले की जैल में, बर्मी की जैल में डाल दिया और जफर जब मरने लगा, तो मरने से पहले उसने बाइसराय को चिट्ठी लिखी कि ए दिल्ली के अंतिम बाइसराय हम माडले जैल में मरने वाले हैं, हम मर जाएं, तो हमारा जनाजा दिल्ली में दफनाया जाए।

मगर हिन्दुस्तान के बाइसराय ने कहा कि नहीं जफर को यह परमिशन नहीं मिलेगी कि मरने के बाद उसका जनाजा दिल्ली में दफनाया जाए। तो उस भय में जफर ने एक गीत लिखा उस जैल में—

“लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में,
किसकी बनी र आलमे न पायदार में,
है कितना बदनसीब जफर दफन के निए,
दो गज जमीन भी न मिली कूए यार में।”

हिन्दुस्तान के अंतिम बादशाह ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ते हुए अपना दम तोड़ दिया और दम तोड़ने से पहले हिन्दुस्तानियों से कह गया —

“न समझोगे तो मिट जाओगे हिन्दुस्तानी बालों,
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दासतानों में।”

आज मैं वही बात विरोधी दल के लोगों से कहना चाहता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान की एकता और अखंडता तुम्हें प्यारी नहीं है, तो हिन्दुस्तान की आजादी खतरे में पड़ जाएगी ... (व्यवधान)

श्री राम अवधेश सिंह : चोर लोगों से, कमीशनखोर लोगों से देश नहीं बचेगा ।... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : आप बैठ जाइये। यह देश को तोड़ने की बात कर रहे हैं ... (व्यवधान) मेरेकानी करके ... (व्यवधान)

You are not ready to hear him. How can you challenge him?

श्री राम अवधेश सिंह : जो कमीशन खोर और चोर हैं, वह देश को बचायेगे। ... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : इनकी बात मैं कितना दर्द है। ... (व्यवधान) उनको सुनिये। ... (व्यवधान)

श्री बी० सत्यनारायण रेडी : कल्पनाथ राय, आप अपने भाषण से कहुत बड़ी गद्दारी कर रहे हैं अपने देश से ... (व्यवधान) अपने शब्दों को वापिस लो ... (व्यवधान)

श्री मोहम्मद खलील-उर-रहमान (आन्ध्र प्रदेश) : जो उन्होंने फरमाया वह ठीक है ... (व्यवधान) लेकिन जो आपोजीशन के खिलाफ ... (व्यवधान)

श्री बी० सत्यनारायण रेडी : असल में देशभक्त हम हैं, तुम नहीं हो। आपने देश को तोड़ा है वास्तव में ... (व्यवधान)

श्री राम अवधेश सिंह : इन्होंने जो कहा कि प्रतिपक्ष के लोग जो काम कर रहे हैं, उससे देश की अखंडता और एकता को खतरा है। मैं कहना चाहता हूँ कि जो कमीशनखोर लोग हैं, देश का पैसा बाहर भेजते हैं उन लोगों से देश को खतरा है ... (व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI) : He has expressed his view; you may differ from him. You can have you say when you get your chance.

SHRI RAM AWADHESH SINGH : But he has no right to accuse Opposition parties.

श्री कल्पनाथ राय : आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं कहना चाहता हूँ ... (व्यवधान)

SHRI RAM AWADHESH SINGH : It is not a question of differing. Do you allow anybody to abuse the whole Opposition?

मेरा व्यवस्था का सवाल है। मैं आपस व्यवस्था चाहता हूँ।

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : आप बैठ जाइये।

There is no point of order. I will not call on it. This is my ruling. You can differ from him. There is no point of order. I will not allow it.

SHRI RAM AWADHESH SINGH : First listen to me and then give your ruling.

मेरा व्यवस्था का सवाल है।

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : मैंने कहा है कि यह व्यवस्था का सवाल नहीं है। ... (व्यवधान)

श्री भीर्ज इशारदबेग : यह अव्यवस्था का सवाल है ... (व्यवधान)

श्री राम अवधेश सिंह : आप मेरी बात नो सुन लीजिए।

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : मैंने सुन ली है। मैंने बताया ना कि यह व्यवस्था का प्रश्न नहीं है।

You may differ from him.

श्री राम अवधेश सिंह : नहीं, अगर आप गाली देने की इजाजत देंगे, तो हम लोग भी गाली देंगे। यह बात आप सुन लीजिए ...

[श्री राम अवधेश सिंह]

He has no right to accuse the Opposition parties. It is not question of differing.

श्री कल्यनाथ राय : आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन कर रहा था कि भारत की एकता और अखंडता को भारी खतरा है। साम्राज्यवादियों ने हिन्दुस्तान की गुलाम बनाया और एक राजा के खिलाफ दूसरे राजा को किया। हैदरअली के बेटे टीपू सुलतान की पराजय क्यों हुई? क्योंकि अंग्रेजों ने उसके प्रधानमंत्री को तोड़ लिया था। इसलिए प्लासी के युद्ध में हम हारे और इसीलिए 1857 में हम हार गए क्योंकि अंग्रेज साम्राज्यवादियों ने हमारे ही देश वासियों को तोड़ करके उनको एक-दूसरे के खिलाफ किया और हिन्दुस्तान पर हकूमत की। उपर सभाध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूँ कि आज दुनिया में सी० आई० ए० की ताकते हिन्दुस्तान को तोड़ने में लगी हैं क्योंकि हिन्दुस्तान एशिया और अफ्रीका के राष्ट्रों के बीच एक शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है क्योंकि इसी मुल्क में 40 वर्ष से प्रजातंत्र का दीया जल रहा है और गुट निरपेक्ष देशों के नेता के रूप में दुनिया के मध्य पर विश्व शांति का सदेश लेकर उभर रहा है। आप मानेया न मानेया दुनिया में राजीव गांधी को एजल आफ पीस कहा जा रहा है और उसे अमरीका और रूस दोनों शांति का दूत मान रहे हैं। अब या तो दुनिया को ये एटामिक हथियार मिटा देंगे वरना दुनिया से एटामिक हथियारों को मिटाना पड़ेगा। इसलिए दुनिया से एटामिक हथियारों को हटाना पड़ेगा वरना ये दुनिया को ही मिटा देंगे। इसके लिए विश्व शांति का काम जो कर रहे हैं, जो सुपर पावरज से मेल कराने का काम कर रहे हैं उन गुट निरपेक्ष देशों का नेतृत्व श्री राजीव गांधी कर रहे हैं। इसको दुनिया मान रही है और आप चाहे मानेया न मानेया। दुनिया की साम्राज्यवादी ताकतों ने एक को दूसरे के खिलाफ लड़ाया और लड़ाकर भारत की आजादी को खत्म किया, हिन्दुस्तान पर कब्जा किया तथा

1947 में जाते-जाते अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान का बटवारा करके हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बना दिए। 40 वर्ष के दौरे में पाच बार हिन्दुस्तान पर पाकिस्तान से हमला कराया। और हिन्दुस्तान में जाति-धर्म और मजहब के झगड़े उभारकर देश को तोड़ने की कोशिश की और आज फिर उन्हीं साम्राज्यवादियों की सब से बड़ी कोशिश हिन्दुस्तान को तोड़ने की है, सी० आई० ए० की पूरी ताकत लगी है, उससे आप सावधान रहिए। आज हमलोगों का राज है, हम सत्ता में हैं कल नहीं रहेंगे। एक बार हम सत्ता में थे फिर हम हार गए और आपको सत्ता मिली थी। आज हम सत्ता में हैं, ही सकता है कि कल आप सत्ता में आ जाएं लेकिन इस राष्ट्र की एकता को और अखंडता को हनें प्राप्तिकर्ता देनी होगी तभी हम भारत की इटेगरिटी की रक्षा कर सकते हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, 1976 में श्रीमती इंदिरा गांधी को भारत के संविधान में एक संशोधन करना पड़ा है। क्या संशोधन करना पड़ा कि,

"It shall be the duty of every citizen of India—

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and tender national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities, to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers and wild life, and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement."

आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, 1976 में विश्व की महान नेता श्रीमती इंदिरा गांधी को भारत के संविधान में यह संशोधन करना पड़ा। इसी संसद में किया। यह किया कि हिन्दुस्तान के नागरिकों के क्या दायित्व हैं। जब देश में एनारकी का बातावरण बन रहा था, जब रेश की पटरियाँ उड़ाँते को बातें की जा रही थीं, जब फोज को बगावत करने का भाषण दे रहे थे, पुलिस रिवोल्ट करने की बात हो रही थी, जब बसों और ट्रेनों में आग लगाई जा रही थी, जब देश को प्रधान मंत्री के घर पर प्रेराव किया जा रहा था तो उस समय हिन्दुस्तान की डेमोक्रेसी की रक्षा के लिए, सोवोरेनिटी इटीमिटी की रक्षा के लिए, राष्ट्र की एकता और अखंडता को बचाने के लिए हिन्दुस्तान में इंदिरा गांधी को इमरजेंसी लगानी पड़ी। और हमारे भारत के संविधान में यह संशोधन करना पड़ा।

आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, आज राष्ट्र की आजादी को सबमें बड़ा खतरा है, हिन्दुस्तान के अन्दर की ओर बाहर की ताकते इस देश को तोड़ना चाहती है। इसलिए सबसे जरूरी है कि महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह जैसे लाखों लोगों की

कुरानियों से हमें आजादी मिली है, हमारे मूल्क के अन्दर शहीदों का खून बहा है और उस खून से आजादी का यह पौधा पौदा हुआ है, आइए, हम सब मिलकर उस आजादी की रक्षा करने के लिए, उस जनतंत्र के पौधे को बचाने के लिए, भारत की एकता और अखण्डता को प्रक्षण बनाए रखने के लिए काम करें और भारत की आजादी की लड़ाई के प्रतीत को सामने रखकर भविष्य के मुहावने दिनों का निर्माण करें ताकि आने वाले भारत की संताने सुधी हो सकें।

इन्ही शब्दों के साथ श्री शिव कुमार मिश्र के प्रस्ताव का हम समर्पन करते हैं। धन्यवाद।

डॉ. बापू कालशते (माहाराष्ट्र) : उपसभाध्यक्ष भहोदय, श्री मिश्र जी ने जो विवेक का लाया है, उसका मैं तहेदिल से स्वागत करता हूँ। स्वागत इसलिए भी करता हूँ कि देश के गौरव और अखण्डता के बारे में मैं जहाँ तक भानता हूँ और इस देश को समझता चूँ, वहाँ तक किसी के मन में सदेह नहीं है।

[उपसभाध्यक्ष] श्री हेच हनुमततथा) नाठासांन हूँ।

उपसभाध्यक्ष महोदय, यह हो सकता है कि कभी-कभी विड़ियोविड़ियों हम लोगों को चिंतित करती हैं, लेकिन जहाँ तक इस देश का जनभानस है, इस देश के नागरिक हैं, उन सबके दिल में राष्ट्रीय गौरव तथा राष्ट्र की अखण्डता के प्रति पूरी निष्ठा है, इस बात को हम भानते हैं। हम सब लोगों का यही भानकर आगे चलना चाहिए।

महोदय, इस विवेक के संदर्भ में मैं थाड़ा पोछे जाकर कुछ बातें अनुच्छेद कहना चाहता हूँ क्योंकि एक नौजवान की हैसियत ने हम आजादी की जग में एक सैनिक के रूप में उम समर काम करते थे। उस समर गौरव का कोई प्रेरणा-झोल था, आपको याद होगा, आपने जिस झण्डे की बात की है, हमने की है.. (ध्यवधान)

श्री नोर्जा ईशाविंदेगः आप तो आज भी बूढ़े नहीं लग रहे... .

डॉ. बापू कालदाते... मैं तो मानता नहीं हूँ, हाकिन उग्र बढ़ रहे हैं, क्या करे। आपको याद होग, सन् 1924 में जब इस देश में पहला झण्डा-सत्याग्रह हुआ, काप्रेस का कोई झण्डा नहीं था, काप्रेस की जो विकास की प्रक्रिया चलती रही, उसमें हमारे गौरव की एक शान, हम रे गौरव का प्रतिष्ठा का लक्षण है, जो इस देश के नीजवाजो में नई राष्ट्र भवित पैदा करे, इसके लिए काप्रेस ने कफी दिन तक साचकर एक राष्ट्रीय ध्वज बनाया। इसमें बढ़िया बात यह है कि उभे देश में नगरपालिका जो सन् 1924 में पहला झण्डा-सत्याग्रह हुआ, उनकी पहली सत्याग्रही महिला न हिन्दू थी, न मुसलमान थी, वह मराठा कमा थी, जो कि पारसी महिला थी। इस देश की आजादी का सारा इतिहास इस देश के सारे धर्म, मजहब, जातियों के लोगों के त्याग का इतिहास है। कोई एक परिवार के त्याग से यह देश आजाद नहीं बना, न किसी एक सखियत से बना यह देश आजाद बना सब मजहबों सब धर्मों के लोगों, गरीब लोगों के त्याग और उनकी समर्थता से। इसके लिए मैं आपसे कहूँ कि यह राष्ट्रध्वज था, जिसके लिए लोगों ने अपनी आत्म-आहूदि दी।

भवोदय, मझे याद है कि सन् 1942 के आदोलन में जब मैं था, तब महराष्ट्र में सिरिंग कुमार नम का 14 साल भहराष्ट्र के धूले जिने का था। क्यों मर गया? इसलिए, कि उसके हथ में यह तिरंगा झण्डा था, वह एक जुलूस निकलकर चल रहा था कि आजादी का उग्र शुरू हो गयी है, स्कूल नहीं चलेगा। आज स्कूल बद हो जाता है क्योंकि पोर कठिन निकलते हैं या फिर सिनेमा ने टिकिट की दर बढ़ जाती है। लेकिन वह जमाना था कि आजादी की प्रेरणा हमारे जीवन में घस गई थी कि दौर आज दी के हम जिदा नहीं रह सकते और इसी से प्रेरित होकर यह

सिरिंग कुमार बहर निकला। अप्रेजों के उस जमाने की जो पुलिस थी, उसमें हिन्दुस्तानी ही कम करने थे, लेकिन अदेश अप्रेजों का मानते थे। तो अप्रेजों के अदेशों पर उन्होंने उस बालक से कहा—झण्डे को निकल दो, इसे केक दो। लेकिन उसने मना कर दिया और वह—मैं जान दे दूँग, लेकिन यह झण्डा नहीं दूँग। यह बात है वह बहादुर लड़के की, वह मर गया, लेकिन उसने झण्डा नहीं छोड़ा, दूसरे के कंधे पर दे दिया। सातवीं क्लास का लड़का घिटटा रह, लेकिन यह झण्डे का जो सम्मन है, गौरव है उसके लिए उसने माफी नहीं मारी और न भागवार गय। इस देश के गौरव के लिए इस देश के कई नीजवान लड़कों ने खुद का बलिदान दिया है। यह झण्डा राष्ट्र को इकट्ठा करने वाला सबसे महत्वपूर्ण चिन्ह रहा है। यह झण्डा इस देश के सम्मान का, इस देश के गौरव का, देश की प्रतिष्ठा का, देश के प्रेरणा-झोत का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण निशान है। इसे अतिम रूप से संविधान द्वारा हमारा राष्ट्रीय ध्वज हमने नय किया। अगर कोई भी इसका असम्मन करे, इसके गौरव को धक्का दे तो यह निहायत ज़रूरी है कि ऐसे असम्मन करने वाला शक्ति को जितन भी ढिड़ित किया जा सकता है, किया जाय। ऐसी व्यवस्था के लिए इस विधेयक द्वारा मिश्रा जा ने सुझाव दिया है।

अब इस देश के राष्ट्रीयत की क्या स्थिति है। हम सभी जानते हैं कि यह राष्ट्रीयत बकिम चंद्र जी की कादबरी से पैदा हुआ है। 'अनंद मठ' जिसमें कि बदे मातरम् का गीत था और यह गीत इस देश में एक मंत्र बन गया था। आज सिनेमा के कई गीत चलते हैं—दिल के टुकडे कई हुए कोई यहा गिरा कोई बसं गिरा। लेकिन बदे मातरम् हमारी भावनग्रन्थों का, आजादी की जग का मन बन गया था। जो भी उस समय बदे मातरम् कहता था वह अप्रेजों के छिलक लड़ने वाला सिपहसालार था। इस भावना से लो इस गीत को गाते थे।

मैं एक व्यक्ति का नाम लेना चाहूँगा वे आज भी जिदा है। बहुत बुर्जुग काग्रेसी कार्यकर्ता हैं। भले ही हम री उनसे सिढ़ातों की लड़ाई ही मृकती है, सियासी मतभेद हो सकते हैं। लेकिन जिन लोगों ने आजदों की जग में अपने को न्योछावर किया, उन सब का हम अदर करते हैं। ये बुर्जुग श्री तुलसी दास जी जधव लोक मत्ता के महत्व पर हैं। वे शोलापुर में आने हैं। मुझ याद है सन् 1932 में जोल पुर में मार्शल ला दगा। उसमें 4 व्यक्ति मारे गए। हम बचपन में सभी गते थे—“धन शेट्टी, शिंदे सारडा, कुर्बानी हुसनी।” कुर्बानी बरदो जान हिंदुस्तान को अपनी। धन शेट्टी दिग्यल थे, मराठा मारडा थे भरदवाडी और कुर्बानी हुइनी थे मुसलमान, जो मार्शल लों में मारे गए। आज किसी महजव को यह अहंकर करने की आवश्यकता नहीं कि मेरे मजहब के कारण देश आजाद हो गया। देश आजाद होगा भगत सिंह के कारण, जलियावाले बाग के लोगों से, चोरीचोरा में, नमक के सत्याग्रह के, बिनोबा जी के व्यक्तिगत सत्याग्रह से। यह आजाद होगा दाढ़ी की यात्रा से। यह राष्ट्रीयता वंदे मातरम् और हम बड़े गौव और शक्ति के साथ कहते थे वंदे मातरम्। यह तुलसीदास जाधव उस समय काग्रेस कमेटी शोलापुर के अध्यक्ष थे। ये जब मार्शल लों में घूमने लगे तो इनको गिरफ्तार किया गया और कह गया कि आप वंदे मातरम् मत कहिए। आपके सिर पर जो गांधी टोपी है इसको किकाल जाएगी लेकिन टोपी नहीं उतरेगी। जान जाएगी लेकिन वंदे मातरम् का नारा कहना नहीं छोड़े। तो यह राष्ट्रीयता, राष्ट्र-धर्म इस देश को इकट्ठा बनाने के सर्वश्रेष्ठ साधन है। काश्मीर से लेकर तमिलनाडु में कन्याकुमारी तक एक राष्ट्रीयता चलता था और यह भव देश को इकट्ठा बनाने में कामयाब हुआ। देश में एक नयी भावना देंदा करने में कामयाब हुआ और इसी भावना के कारण जिस साम्राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता था, इतना अहंकारी साम्राज्य रह गया कि कभी-कभी उस पर सूरज उगता है। इन

भावनाओं को हमें बड़ी संजीदगी, बड़े सम्मान और बड़ी गभीरता के साथ लेने की आवश्यकता है ऐसा मैं मानता हूँ। अब रह गयी भाषा की बात। इसमें इस का जिक्र नहीं है। राष्ट्र भाषा के संबंध में इस विधेयक में कोई विशेष जिक्र नहीं है लेकिन जै यह जरूर कहता हूँ कि जमाना बहुत बदल गया है और हम बहुत गहरे, नीचे से नीचे गिर रहे हैं। हमारे जीवन के सारे स्तर चाहे वे सायासी हों, प्रोफेशनल हों, व्यावसायिक हों या अन्य कामों से संबंधित हों, उन सब में हमारा स्तर गिरता रहा है। एक जमाना था, जैसा कि सत्यनागायण जी ने कहा कि हिन्दी भले ही हमारी भाषा नहीं होती थी लेकिन राष्ट्रभाषा की हैसियत से हम ने उस को मीखते का और समझने का हमेशा प्रयास किया था। भले ही वह हमारी भाषा नहीं थी लेकिन हम मानते थे कि इस देश को एक भाषा की आवश्यकता है और तभी देश इकट्ठा हो सकेगा। राष्ट्र-भाषा भी हमारे देश की अवधता में एक बहुत हृषियार बनेगी जो गांधी जी के कारण इस देश को मिली थी। गांधी जी इतने कुशल थे कि उन के जैसा दूरदर्शी में ने आज तक दुनिया में दूसरा देखा ही नहीं और ऐसा कहना कोई अहंकार की बात नहीं होगी। मैं कितने ही दार्शनिकों को जानता हूँ जिन के बारे में मेरे मन में काफी आदर है, लेकिन तो भी थे मानता हूँ कि दुनिया के आज तक के इतिहास में और खास कर हमारे इतिहास में दुनिया को नयी दिशा देने वाले, दुनिया नहीं देखे आज तक। जहाँ तक को एक नयी दार्शनिक दृष्टि देने वाले एक नई राह दिखाने वाले गांधी जी के अलावा और कोई दार्शनिक मैं ने गांधी जी को और जिन अन्य दार्शनिकों को जानता हूँ वहा तक नहीं कहता हूँ। यह राष्ट्र भाषा गौरव की भाषा रही है। आज हमारे यहा यथा चल रहा है। आज पब्लिक स्कूल्स खोले जा रहे हैं और इंविटिशन मीडियम से डारा बच्चों को पढ़ाया जा रहा है। यह कम नहीं हो रहा है, यह बढ़ रहा है और अगर मैं कहूँ—कल्पनाथ राय जी मुझे माफ

[डा० बांग कालदाते]

करेंगे कि इस में सरकार का भी दोष है कि शिक्षा को जिस ढंग से लाय करना 1950 में संविधान का आप ने जिक्र किया कि जिस को सब लोगों ने मिल कर पारित किया था कि 15 साल के अंदर हम इस को कर लेंगे। हम नहीं कर पाये। ग्रन्थ कारणों को मैं जानता हूँ जिन के कारण यह सब नहीं हो पाया लेकिन सरकार का दोष स्पष्ट है। राष्ट्र भाषा के साथ साथ जो अन्य राज्यों की भाषाएँ हैं उन का भी अगर हम समर्थ बनाते जाते तो जिन को हिन्दी नहीं आती उन के मन में जो यह कमज़ोरी की भावना है कि हम तो हिन्दी नहीं जानते और अगर सारा कारोबार हिन्दी में चलेगा तो हमारा स्थान क्या रहेगा, यह न होती और अगर उन को लगता कि हमारी भाषाय मर्मर्थ है, मणिपुरी है, तमिल है, मलयालम है, कांकरेस आफ तमिल लैखेज हाल ही में मलेशिया में हुई। दुनिया के सारे लमिल के विद्वान वहा डकटा हुए थे। सभी भाषाओं के साथ ऐसा ही मर्मर्थ है, भले ही वह कन्नड़ हो या कोई और। आप की साहित्य अकादमी या नेशनल बुक ट्रस्ट वाले कुछ पुस्तकों का भाषान्तर करते होंगे लेकिन सुदृश्मणियम भारती को महाराष्ट्र वाले उन की पुस्तकों के भाषान्तर के कारण नहीं उन की भावनाओं के कारण जानते हैं। भाषान्तर का, नर्जीमा करने का प्रयाम तो चल रहा है लेकिन भाषान्तर में यदि भावना नहीं आती तो वह स्थिति कायम नहीं रह पाती और केवल शब्द मात्र रह जाते हैं। शब्द के पीछे भावना होती है। शब्द तभी समर्थ होता है जब उस में भावना मिली होती है। शब्द का सामर्थ्य तभी पूरा होता है जब उस में विचारों का परिपोष होता है और विचारों का परिपोष भावना को समर्थ बनाता है। देश में नया सामर्थ्य और भावना पैदा कर सके यह काम हम ने एक बन्दे मातरम् शब्द में देश भर में कर पाया था। मैं इस के लिये आप को धन्यवाद करता हूँ कि हम जैसे लोग जिन्होंने कुछ माल तक, चन्द्र स लो तक ऐसे महान् और महत्तम

लोगों के साथ काम किया, उन के आशीर्वाद से उन की प्रेरणा के हमें यह सौभाग्य हुआ कि उन सोबतों के साथ चन्द दिन रह सकें उन की सेवा करने के लिये। जब वर्किंग कमेटी की मीटिंग पूना में हुई तो उस समय महात्मा गांधी छूट कर पूना आये थे। उस समय मैं राष्ट्र सेवा दल का एक सदस्य था। अब्दुल कलाम आजाद, पंत जी और जवाहर लाल जी जैसे महान नेता वहां थे और उन के अगल-बगल वहां का और रहने का हम को अवसर धूमने मिलता था। उनके बिचार, उनके शब्दों से एक ही कदम पीछे रहते थे। गांधी जी के बारे में यह लिखा गया है—
गांधी जी की गरिमा के बारे में अमरीकी रे लेखक ने यह लिखा है—

THE greatest of Gandhiji does not lie in what he wears, or something like that; greatest of Gandhiji lies in the fact that his action is only one step behind his thoughts.

आज यह बात चल रही है, भाषा पर बहस यहा चल रही है। अखंडता की बात चल रही है, राष्ट्र-भक्ति की बात चल रही है। लेकिन जिस ढंग से आचरण हम करते हैं, क्या वह राष्ट्र-भक्ति का है? वह न तो देश की अखंडता का है, न देश का सम्मान बनाने का है। इसलिए इस प्रस्ताव के माध्यम से अगर मैं इस सदन से यह अपील करूँ, यह दरखास्त करूँ यह प्रार्थना करूँ कि हमें उसी भावना को जाग्रत रखना है तो मैं आपको कुछ कहूँ, आपके ऊपर कुछ उछाल दूँ, इससे काम नहीं चलेगा। हमें आत्मनिरीक्षण करना होगा। हमें देखना होगा कि क्या इस देश का गौरव, इस देश की राष्ट्र-भक्ति, इस देश का राष्ट्र-ध्वज क्या केवल कपड़ा है, उस पर लगे रग क्या केवल रग है, या उनसे जुड़ी भावनाएँ हैं? काढ़ा जब तक थान में है कपड़ा है, लेकिन जब वह रग जाता है तो वह तिरंगा हो जाता है, उससे हमारी भावनाएँ जुड़ जाती हैं। वह हमारी भावनाओं का प्रतीक बन जाता है। इसी तरह से बंदे मातरम् शब्द में का अपने आप कोई महत्व नहीं है, लेकिन उसके पीछे हमारी मत्रण

है। हमारे जीवन से वह बातें उठ चुकी हैं। हम बड़े बड़े शब्दों का उच्चारण करते हैं लेकिन उनमें आचारों का कोई तालमेल नहीं है। जब तक आचार और विचारों का तालमेल नहीं होगा, तब तक आप कितना भी कहिए, देश की अखंडता की प्रक्रिया कठिन होती जाएगी।

मैंने कभी-बी यह कहा है कि मैं आज 1987 को 1947 से ज्यादा खतरनाक साल मानता हूँ। 1947 में हमारे सिफ दो टुकड़े हुए थे। हमारे मन के विरुद्ध बात थी वह। मुझे याद है कि गांधी जी उस सम्मेलन में उपस्थित थे जब भारत के विभाजन का प्रस्ताव पारित हुआ था। मैं उस समय स्वयंसेवक था। जब कांग्रेस ने विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार किया तो श्रीमती अरुणा आसफ अली जो समाजवादी दल में काम करती थी, उन्होंने भावनात्मक भाषण किया। गांधी जी से उन्होंने कहा कि आपने तो कहा था कि इस देश का विभाजन मेरे शरीर के ऊपर से ही हो सकता है, मैं विभाजन नहीं होने दूंगा, तो आप आज क्यों नहीं बोल रहे हैं? गांधी जी ने कुछ नहीं कहा, लेकिन अरुणा आसफ अली की पीट थपथपाई और कहा कि हा यह हो रहा है। लेकिन उस समय देश के दो टुकड़े हुए थे, आज हमको देश के 50 डुकड़े होने का भय दिखाई दे रहा है। गलती किसकी है, उस पर मैं बहस नहीं करना चाहता। मेरी आदत नहीं है कि विषय को छोड़कर मैं कही कही जाकर दूसरों पर कीचड़ उछालूँ। लेकिन जब समय आएगा तो गलती की भी बात करूंगा। वास्तविकता यह है कि दो टुकड़े तो हो चुके हैं और कितने टुकड़े बनने चले हैं, बनने वाले हैं, इसकी गहरी चिन्ता हम लोगों को आज हो रही है।

इसलिए मैं चाहता हूँ कि यह न होने पाए। ऐसा न होने के लिए बहुत कुछ करना पड़ेगा। इसका क्या उपाय हो सकता है, इसकी तरफ हमको ध्यान देना होगा। केवल कहने से भावना पैदा नहीं होती। विकास के प्रयास में दोष

किसका है, हमारे सियासती दलों का है। इन सब दोषों को कब मिटाया जाएगा, मुझे मालूम नहीं है। लेकिन जो हम जनता के नुमाइदे हैं, यहा सदन के सारे लोग भी गभीरता से इन चीजों को ले और जो भी उनको दुर्घट करने के लिए जरूरी हो, भले ही वे सरकारी पक्ष के हो या विरोधी दलों के, इसका एक प्लेटफार्म हम बनाएं जिसके द्वारा ऐसे मसलों को एक साथ बैठकर हल कर सके, ऐसी हवा देश में बन जाए तो मैं समझता हूँ कि देश की अखंडता को क्षति पहुँचाने वालों का हम मुकाबला कर सकते हैं। मबसे बुरी बात मुझ जैसे कार्यकर्ताओं को जो आज लगती है वह यह है कि देश की सैसेटिविटी संवेदनशीलता दिल्कुल खत्म होती जा रही है। जो पुराने, बुजुर्ग लोग हैं उनको याद होगा कि चोरीचोरा का काड़ यूँ पीँ में हुआ था जिसके बारे में गांधी जी के खिलाफ हम शिकायत करते थे, यह अलग बात है लेकिन यह कांड सिर्फ चोरीचोरा तक सीमित नहीं रहा सारे देश में फैल गया। जलियांवाला काहै जो हुआ वह सिर्फ वही तक सीमित नहीं रहा वह भी सारे देश में फैल गया। एक जगह के बलिदान ने सारे देश को जगाया। एक संवेदनशील राष्ट्र में ऐसा होता है कि कहीं किसी एक जगह पर अन्याय हो तो सारा देश खड़ा हो जाता है। कहीं किसी एक जगह पर कुछ हुआ कि सारा देश उसके लिए भागता था। 1905 में बंगाल के विभाजन का एलान अंग्रेजों ने किया। सिर्फ बंगाल खड़ा नहीं हुआ, लोक मान्य तिलक महाराष्ट्र से उठकर आए और बंगाल के विभाजन के खिलाफ सारे राष्ट्र में एक अभियान उस समय चलाया गया। बंगाल को धक्का लगा तो महाराष्ट्र जाग्रत होता है। जलियाबाला बाग में कल्प होते हैं तो सारा देश उठ कर खड़ा होता है अंग्रेजों के खिलाफ। यह संवेदनशीलता है आज हम खो बैठे हैं। हमारी संवेदनशीलता दिन प्रतिदिन घटती जा रही है। लोग मारे जा रहे हैं, श्रीलंका में लोग मारे जा रहे हैं। वे बेचारे

[30. बाप कलदते]

तमनिनाडु के लोग हैं। वहां लगता है बहुत लोग मारे जा रहे हैं। जैस-जैसे हम ऊपर के इलाके में जाते हैं, दूर जाते हैं तो लगता है बहुत कुछ नहीं। पजाब के लोग मारे जाते हैं। पजाब के अगल-बगल के इलाकों में तो कुछ असर दिखाई देता है। लेकिन और दूसरे राज्य के लोग यह सोचने लगे हैं कि यह तो रोज ही चल रहा है। अगर राष्ट्र की संवेदनशीलता ही खत्म हो जायेगी तो अखड़ना साम्भाव्य नहीं है। यह बात नै कह मकता हूँ-नेशनल सटीकिया मस्त बी देयर। यह बात मैं कह रहा हूँ कि जिस दिन राष्ट्र की संवेदनशीलता घटती जायेगी उस दिन हमारी अखड़ता के लिए सबसे बड़ा खतरा पैदा हो जायेगा।

वे इस सदन में आपके माध्यम से यह रहना चाहता हूँ कि इस विधेयक को पारित करिये। मैं मंत्री जी से भी कहूँगा जिं जहर इत्त बारे में सोचिए। परित करिये या न करिये लेकिन उनकी भावनाओं को समझ लीजिए। वे यह मानता हूँ कि यह जो घटती हुई संवेदनशीलता है, इसमें जो गिरावट आ रही है इसको रोकना होगा। जो विकासशील देश है उनका सबसे बड़ा लक्ष्य यह है कि वह लोगों की आकांक्षाओं को समझे। आर्थिक दृष्टि से उनको समझे। मैं इसे कहता हूँ इनफलेशन आफ एक्सेंटेशन। जसे इनफलेशन आफ मनी हो जाता है तो रूपये में गिरावट आ जाती है वैसे ही हनरी आकांक्षाओं में इनफलेशन आयेगा तो वास्तव और आकांक्षाएं मेल नहीं खायेगी। और जब वास्तव और आकांक्षाएं मेल नहीं खाती तो लोग एक्स्ट्रीमिज्म की तरफ जा कर कुछ करना चाहते हैं। जो कुछ नहीं कर पाते वे निराश होकर बैठ जाते हैं और जो बचे होते हैं वे किसी न किसी ढंग से अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करते रहते हैं। मैं यह कहता हूँ कि तीनों पंक्तिया डेविशंस हैं। इसको कम करना होगा। मही आकांक्षाओं को सही व्यवस्था के रूप में ढालना होगा तभी सही संवेदनशीलता प्रकट होगी।

सही राष्ट्र प्रेरणा, राष्ट्र भक्ति हम को जगाने होगी। देश को बचाने के लिए, देश को अखड़ रखने के लिए, इन भावनओं को फिर से जागृत करने के लिए मेरा मुझाव है कि हम लोग इस दृष्टि से देखें और यह प्रतिक्षा करें कि हम लोगों ने जिन उम्मों को लेकर इस देश को एक बनाने का प्रयास दिया था, जिन बुनियादी मिद्दातों को लेकर हमने आजादी की लडाई लड़ी थी, बदम-बदम पर हम यह समझे कि यह राष्ट्र की सम्पत्ति है, यह राष्ट्र की देन है इस राष्ट्र की देन को सिर्फ कायम न करे बल्कि इस राष्ट्र की देन को मजबूत करने का प्रयास भी हम सब मिलजुल कर करे, इस भावना के साथ मैं इस विधेयक का तहे दिल स समर्थन करता हूँ। धन्यवाद।

ठाकुर जगतपाल सिंह (मध्य प्रदेश) : नेशन कांज के लिए जो यह खड़ हैं तो पूरा नेशन इनके साथ खड़ा होगा। लेकिन जब सेल्क इंट्रोरेस्ट आ जाता है तो नेशन साथ नहीं देता। लोग मारे जायेंगे।

श्री वीर भद्र प्रताप सिंह (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, अभी आपने वर्तमान बापू के विचार सुने। मैं अपने वर्तमान बापू को आश्वास्त करना चाहता हूँ। यह विधेयक हमारी संवेदनशीलता का प्रतीक है। यह विधेयक स्वतं इस बात का चोटहूँ है कि हम इन विषयों में संवेदनशील हैं परन्तु प्रश्न विधेयक का है, प्रश्न मूलतः भाषा, इतिहास और राजनीति का इस बक्त नहीं है। मझ थोड़ा इस बात का दुःख है कि चर्चा विधेयक पर बिलकुल नहीं हुई है, अधिकतर विषयान्तर ही होता रहा है। मैं एक बात जरूर विषयान्तर करके कहना चाहता हूँ। यहा पर प्रश्न मातृभाषा का उठाया गया। मझे बड़ा दुःख है कि इस देश मैं रहने वाले अपनी मातृभाषा नहीं जानते हैं। मातृभाषा वह हुआ करती है जो बच्चा अपनी माँ से अपनी माँ की गोद में बैठकर मुनदा है। मेरी माँ मुझ से भोजपुरी में बात करती थी। यह बड़ी मरस और मधुर भाषा है। अपनी माँ से

का महत्व है। लेकिन हमने आज इन बातों को खो दिया है। हमारे जैसे लोगों के लिए यह दुख की बात लगती मैंने जो भाषा सुनी वह भोजपुरी थी। भोजपुरी के माध्यम से मैंने अपनी मांग को सद्गति का प्रयास किया। नवचनत गैरि समाज को सद्गति का प्रयास किया और वह भी मैंने अपनी मां की भाषा के माध्यम से किया। जब हवार शरीर कुछ बड़ा हुआ; और हम अपने पैरों पर खड़े हुए तो स्फूल में पड़ुंचे लो। वह मुझे जो भाषा पढ़ने और सुनने को मिली उसकी उस बहु खड़ी बाली का नाम दिया जाता था और उसी को बाद में हिन्दी कहा जाने लगा। मगर इस देश का एक इसी भाषा भी हमने अपने स्फूल में पढ़ी जिसको उन जमाने में दीया चबात कहा जाता था, जिसको उद्दू कहते हैं। उसके बाद जब हम स्फूल में चलकर न्यायालय में पड़ुंचे तो मेरे कानून के गुल जो एक मुस्तमान थे, उन्होंने मुझे अर्जी दाता दाखिल करना सिखाया। उन बहु हम बाद पक्के नड़ी कहते थे। उन बहु हम मट्ट मुख्तराई अर्जी जैलक कहते थे। “निराकिं बाद-पक्के प्रस्तुत करते हैं” बाद में आया। इसलिए अनें मिश्रों को सावधान करना चाहता है कि वे अपनी मानवाधिकारों को न भूलें। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, हम उसका आदर करते हैं, उसके प्रति नमस्तित हैं और भारत की जो 15 राष्ट्र-भाषाएं हैं, हम उन सब की प्रतिष्ठा करते हैं। किन्तु हमें इन्हीं जल्दी अपनी मानवाधिकारों को भी नहीं भूलना चाहिए। जो भूलने हैं वे अपनी मानवाधिकारों के प्रति दोष के दीर्घी हैं।

अब प्रश्न इस विधेयक का है। मैं कुछ चीजें विधेयक के संबंध में कहना चाहता हूं। मिश्र जी को धन्यवाद इसलिए देता है कि उन्होंने विधेयक हिन्दी में प्रसारण किया। राष्ट्रभाषा में प्रस्तुतिकरण को हम संविधान संशोधन के द्वारा मन्तव्यता दे चुके हैं। किन्तु कानूनी विषय है, को इस प्रकार तकियां हैं उनकी तरफ मैं उनका

दान आकृषित करना चाहता हूं और मैं समझता हूं कि वे इसमें सुधार करेंगे। सर्वप्रथम ये उनका ध्यान धारा 8 जी उनधारा धारा 3 की तरफ आकृषित करना चाहता हूं। केन्द्रीय सरकार उन कारणों से जो लेखबद्ध किये जाएंगे, इनमें लेखबद्ध नहीं हैं, एक मालिक, मेढ़ारितक सबाल की ओर विधेयक प्रस्तुतिकर्ता का ध्यान आकृषित करना चाहता हूं। चूंकि धारा 3 में उन्होंने कहा है कि केन्द्रीय सरकार उन कारणों से जो लेखबद्ध किए जाएंगे, उस व्यक्ति की नागरिकता प्रस्तावित कर सकती है, जिसे उनधारा (1) के खण्ड (क) के अधीन उससे कचित विधिया जा चुका है, किन्तु नागरिकता के न रहने की तारीख से पांच वर्ष की अवधि के बाद ही। चूंकि आपने इन विधेयक में लेखबद्ध नहीं किया है। अ. आप विधायिका के कार्यक्षेत्र ले 4.00 PM रहे हैं। इसकी अनुमति आपको कानून नहीं देता है क्योंकि हमारे संविधान में न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका भिन्न हैं। इसलिये जो भी आपको लेखबद्ध करना है, जो भी भूलभूल तिदंत आप विधेयक के द्वारा लेखबद्ध करना चाहत है वह आप कार्यपालिका या सरकार पर नहीं छोड़ सकते। जब आपने सरकार पर छोड़ दिया तो उनको अंग्रेजी में डेली गेटेड लेजिस्लेशन के सिद्धांतों के आधार से वह नष्ट हो जायेग। इसलिये आपका यह धारा निर्मल होगी। जो आपने लेखबद्ध किया है वह विवेचित नहीं है। मैं मिश्रा जी से अनुरोध करूँगा कि जब आप एक अच्छा विधेयक लाये हैं, एक सारांभित विधेयक लाये हैं—राष्ट्र की संवेदनशीलता के लिये एक अच्छा विधेयक लाये हैं, जो कि स्वागत योग्य है, लेकिन इसमें जो कानूनी वृद्धियां हैं उनमें वे सुधार करें।

उपसभाव्यक महोदय, मिश्रा जी ने अपने चिन्तन एवं विचार सम्बन्ध का परिचय देते हुये इस विधेयक पर हमें बोलने का अवसरप्रदिया है। मैं इसके दो प्रश्नों की तरफ आपका ध्यान आकृषित करना चाहता हूं। एक तो है भारत का ध्वज और दूसरा संविधान।

जहां तक भारत के ध्वज का प्रश्न है मेरे मिश्र ने इस बात का वर्णन किया है उसमें

[श्री वीरभद्र प्रताप सिंह]

हम सभी की भावनाय सन्तु द हैं। राष्ट्रीय छवज जो चरखा युक्त है वह राष्ट्रीय आंदोलन का छवज है और यह हमार दल का ध्वज है। लेकिन राष्ट्रीय छवज चरखा युक्त नहीं बल्कि इसमें असाक चक्र बना है। इस विधेयक के जरिये उस चक्र युक्त राष्ट्रीय छवज के सम्मान की व्यतीना की गई है जो स्वागत योग्य है। एक प्रश्न बार-बार उठाया जाता है और वह भारत के संविधान के सम्बन्ध में है। इसलिये इस सम्बन्ध में मैं थोड़ा सा विवेचन अपको आज्ञा से करना चाहता हूँ। भाषा के प्रश्न को आप लो-जियें। हमने पन्द्रह भाषाओं को राष्ट्रीय स्तर की मान्यता दे दी है और हिन्दी को हमने राष्ट्र भाषा घोषित किया है आर संविधान का मूल हिन्दी और अंग्रेजी में दोनों हैं जो 1950 में पासित हुआ था तो इस पर विस तरह से आक्रोश किया जाता है यह भी भी समझ में नहीं आ त है। क्या इस देश के लोग जो भारत को गणतन्त्र का स्वरूप दिया गया है और गणतन्त्र में विभिन्न राज्यों को सन्नन्द दिया गया है तो क्या वे यह भूल जाते हैं कि यहाँ का संविधान कैसा है। जब आप यह बहस करते हैं, राज्य और केन्द्र के संबंधी के बारे में विवचन करते हैं तो क्या आपको मलूम नहीं कि यहाँ का संविधान दितना लचीला है। यहीं एक संविधान है जिसमें दृढ़ व ऐ संशोधन दिये गये हैं। बार-बार संशोधन करने का तात्पर्य यही है कि संविधान लचौल है। यह संविधान टूटेगा नहीं। न तो संविधान टूटेगा और न संविधान से चलने व ला देश टूटेगा। मैं आशंकित हूँ, मैं निरश के दशी-भूत नहीं हूँ। चहे ऐसी भावना दधर से व्यक्त की गई हो और चहे इधर से व्यक्त की गई हो। अगर भारत के संविधान की आत्मा को आप समझ लेगे तो आप इस निरश से छूट जायेंगे कि ऐसा होने पर यह देश टूट जायेगा। एसा हम र संविधान निर्माता ओं के सूझवूँझ से, अपने चितन से, अपन विचरों से मन्जुबज्जल इसके विभिन्न रूप विभिन्न धर्म, विभिन्न सम्प्रदय, विभिन्न धर्म और विभिन्न जलवाय सबको ध्यान में रख दर यह ललीचा संविधान बनाया है। इसलिये हमको आशा रखनी

चाहिये कि यह देश टूटेगा नहीं। इसी-लिये हमने इसमें बार-बार संशोधन करके परिस्थितियों के अनुकूल, देश की विकास-शील आवश्यकता ओं के अनुकूल बनाया है। हम गौरव निवार हैं कि वह हम देश की आवश्यकता के अनुसार संविधान में संशोधन किया जाता है जिसका यह इस बात है योताह है कि हमार संविधान के प्रति वही भी दिसो प्रकार की मतभिश्चता नहीं होती चाहिये और जब जब उसकी स्थानीय विचरों से टकराहट हुई है भने उस टकराहट को फौरन दूर किया है संविधान संशोधनों के लिये जरिये और हम उनकी क्षेत्रीय भावन ओं के प्रतिकल बन यें। हम र जो संविधान निर्माता थे जो विचरणील लोग थे जिसमें हर विचारधारा का प्रतिनिधित्व इस देश का रहा है जब कोई व्यक्ति यह बहुत है दोनों तरफ से हम सुनते हैं कि टूट रहे हैं, टूटने व ल है या कोई तोड़ देगा तो मैं समझत हूँ कि ऐसे लोग भारत के संविधान को नहीं समझत हैं इसलिये वे लोग बहकी बहकी बात बताते हैं बिना उनको समझे चहे जो शह देते हैं। इसलिये मैं विनम्र शब्दों में अनुरंध वरुणगा मिश्रा जी ने संविधान के प्रति बहुत आदर की भावना व्यक्त की है इस संशोधन के जरिये वह बहुत ही सरहनीय है। अब मैं उनकी दो तीन चीजों के बारे में अपनी रथ देना चाहत हूँ। उन्हें कुछ स्पष्टीकरण विधेयक व सथ जा है उसमें ट तीन ग्रन्थ हैं। धार ये तो बानून सही मर स्पष्टीकरण बानून विरोध हैं। अगर यह स्पष्टीकरण रखे जायें त यह जिसी भी न्यायालय के जरिये सम्पूर्ण दर दिये जायेंगे। जिसको हम अंग्रेजी में दहते हैं कि यह संविधान के अलटर-व द्वारा ता न हो मगर यह बानून के अलटर-वायर-ज ज हो जायेंगे। इसलिये जब हिन्दी अंग्रेजी में कोई बानून बन वे तो इस बह बा द्यन रखें। इस देश में और बह द बा न हैं अर बा नुनों में जब टकराहट होती है तो वही वह टकराहट संविधान के मलभूत गिर दतो का उल्लंघन तो नहीं दर्त है या मलभूत रिंड-तो की अवहेलन तो नहीं है वही है। इसलिये मैं श्री मिश्रा जी से निवेदन वरुण दिय हैं उनकी तरफ व ध्यान द। उनका संशोधन है धार 2 का पहला स्पष्टीकरण तीसरा स्पष्टी-

करण, यह अनुचित है, यह चलेगा नहीं। यह संविधान की धारओं के उल्लंघन में आएगा। इस लिये वह टट जाएगा अदालतें उनको मन्यता नहीं देंगी। इसलिये आप उसको ठीक करने की कोशिश करें। जिन विषयों पर बहुत से कानून हैं मैं यह बहुत रहा हूँ कि जब हम कोई नया कानून बनाते हैं तो हर चोज पर लिखने लगते हैं। हमारे पास भारतीय दंड प्रक्रिय सहित है उसके बाद अगर उससे काम चल जाए तो क्या यह आवश्यक है कि आप इस में उसी बात की लिख दे। वह जो चार जगह चार दफा चार कानूनों में लिखी जाएगी तो विसी भी दिन जब अदालतें विवेचन करेंगी तो चारों का समीकरण करने लगेगी तो हो सकता है कि आपका कानून और कमज़ोर पड़े। इसलिये अदालतें उसको मन्यता नहीं दें। इसलिये यह भी विधि निर्माण का एक नियम है कि इस तरह से परस्पर विरोधी जो धाराये हैं या जो समान न्तर धाराये अन्य विधि पुस्तकों में उपलब्ध हैं उसी के समानान्तर या उसी के अनुरूप हैं मेरा पहला यह दिचार था कि संविधान का उल्लंघन करने वाली धारा या उपधारा को मत लाइये और जो दूसरे कानून उपलब्ध है भारत के अन्दर उनके समानान्तर भी आप धाराये मत लाइये। इसमें वही धाराये हैं जो ऐसी हैं उन पर मैं आपको राय दुंगा इसलिये इन कानून में वही जगह संशोधन करने की आवश्यकता है क्योंकि आपने संविधान की अवहेलना के साथ-साथ समान तर धारायें रखी हैं और इन धाराओं से विधेयक बनाना दचित नहीं है। अब आप सें तीसरी और सैद्धांतिक अवहेलना बानन की हुई है। जो मूल धारा के उल्लंघन में आपने सजा दी है उसको उकसाने की सजा भी वही रखी है आपने, यानी मैंने जो दंड है वही उकसाने का भी, जो दोषी है तो दोनों को आप एक समान स्तर पर क्यों रखते हैं। न्यायपालिका ये कहेगी कि उतना ही दोष दण्ड करने वाले का है और उतना ही दोष दण्ड उकसाने वाले का होगा। मैं समझता हूँ कि यह नियमन बाध्यता नो नहीं है मगर न्यायपालिका की नियम परिधि के अन्दर इसकी विवेचन। आवश्यक है कि उकसाने वाला वस दोर्पाल होगा। जब आप यह विधेयक बनाते हों तो इसकी भी आप विवेचना करो। मैंने तीन स्थानों पर पाया कि जो मस्तिष्क नियम तोड़ने वाले की सजा है वही उकसाने वाले की भी

मजा है, इसको समानातर मां करो बदौनि कानन वहुन लम्बा चौड़ा है, जब आप कहते हैं कि 6 महीने से 7 साल की सजा हो जायेगी तो जज यह बहता है कि हम तो 7 साल की सजा करते हैं मगर परिस्थिति ऐसी अभिभूत है कि हम 9 महीने की सजा स इनको बरी कर दे रहे हैं। यह कानन बनाने की एक प्रक्रिया है। अत मैं आपसे निवेदन करूँगा कि विधेयक अच्छा है, इसमें राष्ट्रीय सम्मान की रक्खा है, ध्वज की रक्खा है और हमारी संवेदनशीलता वा प्रतीक है लेकिन मैं बापू कालटाते जी को फिर बताना चाहता हूँ कि हम उन्ही संवेदनशीलता के सिद्धांतों से प्रभावित होकर वह रहे हैं कि आप ने जो यह बिल पेश किया है इस पर थोड़ा ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि मालूम होता है कि कुछ उल्लेख से और जो कानन बनाने के नियम हैं उनका न पालन करके, आपने उसको रख दिया है। विद्युत-विधेयक की भावना अति उत्तम है, विधेयक के पीछे विचार उत्तम है, विधेयक के पीछे जो हमारी मान्यतायें हैं, जो हमारा मन्त्तव्य है वह वहुत ही सदर है। इन्ही शब्दों के साथ मैं इसका भमर्यन करते हुये आशा करता हूँ कि आप इसकी नियमगत दशाओं का निवारण करेगे।

[श्रीं जगदम्बी प्रसाद यद्दन]

आज के सदर्भ में प्रस्तुत किया है मैं उनका भी आदर दृढ़ते हुए उन बातों से महसूत व्यक्त वारना चाहता हूँ।

उपर्युक्त जी, एवं सभाल प्रकट कर इस पर विचार करना चाहता हूँ कि आज इस विधेयक को प्राप्तिगति क्यों है? मिश्र जी को क्यों आज इस विधेयक को प्रस्तुत करने की आवश्यकता पड़ी? उन्होंने देखा फि देश में कहीं कहीं पंचिधान के दशों को जन्म ना जाता है। कहीं-कहीं राष्ट्रीय धर्वज को अपमान भी महना पड़ता है। इसको देखकर निश्चयपूर्वक जो भाव हमारे मित्रों ने प्रकट किया है कि देश के प्रति खनरा है क्या, ने इतना तो कहना चाहता हूँ कि देश की जनता जब-जब 1962 को, 1965 को, आक्रमण होता है विदेशी का, तो एक-एक बच्चा खड़ा हो जाता है और खड़ा होकर देश के लिये मर-मिटने की तमन्ना प्रकट ही नहीं करता है, बल्कि उसमें आहुति भी देता है, लेकिन इतिहासकार जो देश के कर्णधार हैं, उनको इतिहास की सावधानी भी बरतने के लिये कहता है।

यह देश कभी-कभी अगर टट्ठता है, तो जब जय चंद, मीर जाफर जैसे देशद्रोही होते हैं, तब। इसलिये इतिहासकार को इसको नहीं भुलाना पड़ेगा कि देश में त्यागी है, देशभक्त है, लेकिन उसमें कुछ मनि भ्रम करने वाले भी हो सकते हैं। हम जानते हैं कि दो राष्ट्रों का, दो प्रकार की एजेसी सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है—कहीं उसको सी, आई ए. कहे, कहीं के ० जी. बी.। तो यह अपनी-अपनी ताल से—अगर हम उनके अनुकूल हैं तो ठीक है, प्रतिकूल हैं, तो उस प्रतिकूल को अनुकूल करने के लिये वे षड्यन्त्र रचते रहते हैं।

इसलिये आज इस तरह की आवश्यकता है।

दूसरी बात जो मैं कहना चाहता हूँ कि प्रसागिकता क्यों? अप्रेजों ने आक्रमण करने के लिये पहले प्रवेश नहीं किया था। यहां व्यापार करने के लिये आये थे और व्यापार करते-करते सामाज्य स्थापित किया, इन्हीं मीर जाफर जैसे लोगों की बदौलत। मुझे क्षमा करें भारत सरकार का सरकारी तत्त्व श्राज पुनः इस तरह के यहां काम करने

जा रहे हैं—बहु—राष्ट्रीय कम्पनियों को हिदुस्तान में आने का मौका दे रहे हैं। मैं सावधान करना चाहता हूँ कि यह बहु—राष्ट्रीय कम्पनिया—आज अर्थतन्त्र का युग है, आर्थिक दृष्टि से हमें यह धेरने का प्रयत्न न करे। अगर देश की सरकार सावधान नहीं रही, तो मैं समझता हूँ मल्टी-नेशनल कम्पनी हमारे लिये कभी भी खतरा पैदा कर सकती है।

इसलिये मल्टीनेशनल जपचर्व, मीर जाफर का इतिहास राष्ट्रीय कर्णधारों को नजर हमेशा खुली रखने के लिये, नब्जों पर हाथ रखने लिये बार-बार आकर्षित करता है।

श्रीमन्, सविधान की बात आई है—आज भी आप ने सविधान में धारा 370 है। जब राष्ट्र का कोई विधान बनता है, तो उसमें लिखा जाता है कि धारा 370 के हिसाब से जम्मू-कश्मीर को छोड़ कर जो बाहर से आकर के आजादी के काल से ही रह रहे हैं, वे आज भी धारा 370 का भुगतान हजारों-हजार लोग भुगत रहे हैं। वह देश की लोक सभा के चुनावों में तो भाग ले सकते हैं लेकिन वहां की विधान सभा में नहीं। तो इस तरह की अनेक धारायें हैं, जो इस देश में कभी-कभी वाधक का रूप अद्वितीय कर लेती हैं।

इसलिये मैं संविधान में इस ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। संविधान का धर्व, राष्ट्रीय गान, राष्ट्र-भाषा—ग्रा. र किसी भी राष्ट्र का कोई प्रतीक होता है, कोई चिन्ह होता है, कोई पहचान होती है। उस पहचान को स्वतन्त्रतापूर्वक हम कैसे दुनिया में प्रकट कर सकते हैं, जब तक कि इसकी अपने देश में ही हम प्रकट न करे सकें।

इसलिये सविधान को तो हम आवश्यकता-नुसार बदलते हैं, लेकिन कुछ चीजें जो बदलने की नहीं होती हैं, उसको भी हम बदलते हैं।

बदे मातरम् पर ब्राह्म कालदाते जी ने उसके सारे इतिहास की भावमय दश्य में रखा। लेकिन मैं अगर सभाल सरकार से पूछूँ कि बदे मातरम् ही राष्ट्रगान क्यों नहीं रहा, जिस राष्ट्रगान ने देश को उद्वेलित किया, हरेक ने उसके नाम पर फिदा हो करके त्याग

किया, उसको दूसरे स्तर पर क्यों रखा गया? मैं कोई राष्ट्रगणन जन गणना का विरोधी नहीं हूं, लेकिन जिस भावना का प्रतीक वह मात्रम है उस भावना का प्रतीक जनन-गणना नहीं है और हो भी नहीं सकता। इसके रचयिता महान हैं उनका मैं आदर करता हूं, सम्मान रखता हूं, लेकिन वह तो अपना इतिहास स्वयं बना गया है। इस इतिहास को अगर पनः आप सावधानी-पूर्वक नहीं लेंगे तो जिस विषय की प्रासंगिकता के बारे में मैंने आप से प्रश्न किया भावना उठाने वाली बातें क्या होगी? जिस भाव पर, अर्थ पर नहीं, पैसे पर नहीं, भाव पर जीवन आहुति देता है व्यक्ति वह भावना भरने वाला कौन सा गान होगा? आज आप देखें आपके साहित्य में, आपके पाठ्यक्रम में कितनी कवितायें हैं, कौन से ऐसे गान हैं जो देश के वरच्चों को, देश के किशोरों को उसमें राष्ट्रीयता की भावना बढ़ाते हों। आज हम वंदे मानरम भूलते जा रहे हैं और जब कोई वंदे मानरम भूलेगा तो अपने त्याग का और अपने इतिहास का भी कुछ स्मरण करेगा? इसलिये मैं इस बात को उठाना चाहता हूं। जहां तक ध्वज की बान है, मैं एक कहानी कहना चाहता हूं, स्वामी विवेकानन्द किनने बड़े महापुरुष हुए। वह जब विदेशों में भ्रमण कर रहे थे तो उनके पास एक पुस्तक थी जिसमें सभी राष्ट्रों के झड़े थे, ध्वज थे। एक बालक किशोर उनके पास आता था, वह पुस्तक उलटाता था। वह बालक आता था।

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): He spoke in English.

श्री जगदम्बो प्रसाद यादव : अगर मुझे ठमिल आती तो मैं आपका सम्मान अन्तःकरण से करता।

SHRI V. GOPALSAMY: Vivekananda gave a historic address in English in Chicago.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA (Uttar Pradesh): That was in a foreign country.

SHRI V. GOPALSAMY: He could express his views in English.

श्री जगदम्बो प्रसाद यादव : मने त। कहा है अगर मुझे तमिल आती होती तो उस तमिल भारती में निषिवतपूर्वक बोलता और अपेक्षा ही सम्मान नहीं मैं तमिल का सम्मन करता। आपके दिल में चाहे जो भावना हो, आपकी भावनाये चाहे जो हो... (अवधारणा)।

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) : इनको हिन्दी का नेता बना दीजिए फिर सब ठीक हो जाएगा?

SHRI V. GOPALSAMY: Sir, cutting across party lines this side and that side all have become united about Hindi fanaticism.

श्री जगदम्बो प्रसाद यादव : उपराष्यद जी, जहां पर हिन्दी केनेटिसिजम की बात होगी मैं भी उमका विरोध करूंगा, आप ही नहीं और हिन्दी राष्ट्रभाषा हिन्दी नहीं रही राजभाषा हिन्दी है। राष्ट्रभाषा मैं समझता हूं कि होनी चाहिये थी यह शब्द होना चाहिये था। लेकिन हुआ राज भाषा। राजभाषा तो हर राज्य में है चूंकि वहां पर भी कुछ न कुछ तत्व विवेचन की गलती हुई। हर राज्य की राजभाषा अंग्रेजी नहीं उसी राज्य की राजभाषा तो होनी ही चाहिये थी और हिन्दी को राष्ट्र की भाषा होना चाहिये था। अगर राष्ट्र से भी दुख होता है तो जनसम्पर्क की भाषा और सराव यह है कि जन सम्पर्क की भाषा हमको विकलित करनी पड़ेगी। हम चाहे कितना भी प्रयास करे, कितने दिनों तक हम विदेशी भाषा ले जा सकत हैं? अंग्रेज ग्रनी किसी कीमत पर न हम री संस्कृति की भाषा हो सकती है चूंकि संस्कृति की भाषा हमारी सभी राष्ट्र भाषाएं ही हो सकती हैं हमारी भाषा हो ही नहीं सकती क्योंकि राष्ट्र का, उस देश के इतिहास का, उस देश की संस्कृति का, देश की भूमि का, मिट्टी का, नदी का, जंगल का, पर्वत का, उस देश की हवा का, उस मन्दिरकी का वर्णन दूसरी भाषाओं में नहीं मिल सकता है। और तो और विदेशी भाषा हम री भाषा को ही नहीं हमारी संस्कृति को भी विछृत करती है। मैं इसका कई बार उदाहरण दे चुका हूं, मैं उस पर नहीं जाना चाहता, लेकिन मैं यह जरूर कहना

[श्री जगदम्बे प्रसाद यादव]

चाहता हूँ कि भारतवर्ष की बाहर अमर पहचान होगी तो वह किस चीज गे होगी ? मैं ब-र-व र कहत हूँ कि दूताव स में आप क्या करते हैं ? क्या भारतीय संस्कृति का प्रचार करते हैं ? नहीं करते हैं । अप्रंगेजी भाषा और अंग्रेजी संस्कृति के प्रचार करते हैं । अप्रंग दूर को छोड़ दीजिये, मैं नेपाल की बात करता हूँ, नेपाल में जब भारतीय संस्कृति और अंग्रेजी के प्रचार करते हैं तो सैने खुद उनके मह से कहते सुना है कि तम से अंग्रेजी क्यों सीखें, सेकेण्ड प्रेड अंग्रेजी है यह, क्यों न हम यह अंग्रेजों से सीखें, जिनकी एम्बेसी यहाँ पर तैयार है । अगर यह पाश्चात्य संस्कृति सीखना है तो उनसे क्यों न सीखें, तुमने क्यों सीखें ?

महोदय, हम रे एक मित्र को कहा, एक डक्टर मित्र को उसके मित्र ने कि तुम यह चिट्ठी अंग्रेजी में लिख रहे हो, क्या तुम्हरे भारतवर्ष में कोई तुम्हरी विकसित भाषा नहीं है, जिससे तुम अपने घर व लों को चिट्ठी लिख सको । उसने उसके मतभाव नहीं समझा और कहा कि हम री बंगल भाषा ऐसी है, हम री तमिल भाषा ऐसी है, तेलगु भाषा ऐसी है, मरठी भाषा ऐसी है, संस्कृत ऐसी है, एक दर्जन भाषाएं गिन दीं कि दुनिया की किस समृद्धशाली भाषा के मकाबले कर सकती है । एक बरतो उपने इश्वर स नहीं किया, कहा कि गलत बोलता है । . . . (व्यवधान)

SHRI V. GOPALSAMY: Mr. Vice-Chairman, Sir, there is one solution for the population problem. If you ask all the doctors to give prescription in Hindi, you can solve the problem.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : से उसका भी जवाब देने में समर्थ हूँ । मैं इस बात को कहता चाहता हूँ, अपने उसकी भावना को नहीं समझा ।

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच हनुमनतप्पा) : यादव जी, जवाब देने की जरूरत नहीं है । Let us not convert this into a debate on Hindi.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : नहीं-नहीं, मैं डिवेट पर नहीं हूँ । तो उसकी भावना को लन्दोने समझा नहीं ।

जब सभा लिया कि सचमूच में यह तो उसने कहा कि हम ऐसे साथी से एक सचमूच बैठना, जो अज भी गुलाम है, नीच है, उसके सच नहीं बैठना चाहेंगे । तब उसने आने घर में अपनी भाषा में चिट्ठी लिखनी शुरू की ।

महोदय, स्वामी विवेकानन्द के पास एक बालक ग्राता था । उसके पास ज्ञाण्डा देखता था, सोचता था, कितना महान है वह देश जिस देश का यह आदमी है, उस देश का ज्ञाण्डा कौन सा है । उस समय भारत अंजद नहीं था, इसलिये भारत का अपना कोई झंडा नहीं था, भारत पर यूनियन जैक फहर ता था । उसने अपने पिता से पूछा कि भारतवर्ष का झंडा कौन सा है ? उसने कहा कि भारत का झंडा क्या होगा, वह तो गुल म है । उसको ध्यान आ गया, पूछा कि तुम विवेकानन्द के साथ जाते हो क्या ? वत्य—हाँ, जाता हूँ । बोले—नहीं-नहीं, वह विद्वान ही सकता है, मह न हो सकत है, लेकिन गुल म है और गुल म के पास जन ना ठीक नहीं है । इतने मह न अदमियों को भी ठोकर छानो पड़ी । मह न नेताओं को जब ठोकर लगी तो उन्होंने आज दी की लड़ ई और उग्र रूप से लड़ी ।

जहाँ तक ध्वज का सबल है कि ध्वज का सम्मान किस प्रकार से किया जाय, इसको सीखने की अवश्यकता है । ध्वज को सिर्फ ध्वज कह कर नहीं, कपड़े का ध्वज कहकर नहीं बल्कि ध्वज एक सम्मान का प्रतीक, स्वभिमान का प्रतीक हो । हम जब दुनियां में जाते हैं किसी चीज को लेकर, चहें खेल हों य कुछ हो, तो राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में ध्वज लेकर ही जाते हैं । इसलिये ध्वज के प्रति एटीटूने की तरफ ले र उस भव में अगर ही रहा, तो ध्वज तो कपड़ ही होगा । ध्वज के पीछे एक भावना होनी चाहिये, उसके पीछे संकल्प होना च हिये उम ध्वज को ऊंचा रखने के लिये, ध्वज के प्रतीक रम्भान रखने के लिये कि कैसे इसको अ गे ले जा सकते हैं ।

मैं एक बात बताना चाहता हूँ, 1942 में जब पटना में एक कलेक्टर का छात्र अर्था कि हम ज्ञाण्डा फहर पेंगे तो वहाँ के कलेक्टर ने कहा कि जो झंडा फहरएगा, उसको गोली आ दी जाएगी । एक-एक लड़का आगे

बढ़ता था और उसे गोली मरी जाती थी। इस तरह एक-एक करके आगे लड़के बढ़ते जाते थे। और उस प्रेसेज के हाथ में जितनी गोलियाँ थीं, खत्म हो गयीं, लेकिन जड़ा लकड़ कर आगे बढ़ने वाली की पंचित खत्म नहीं हुई। आज भी सचिवालय में उनका प्रतीक है। तो जड़े का स्वाभिमान करने की जो बात है, उसके लिये मैं चाहता हूँ कि इस विभाव से जब तक हम विचार नहीं करेंगे, उब तक जड़ा खाली झड़ा रहेगा।

हमारे जिश्र जी ने तीन-चार बातों की प्रोर ध्यान दिलाया है, उन्होंने भारतीय व्यवज के बारे में कहा है—संविधान य, उसके किसी भाग को विकृत, विरूपित, अपवित्र, विवृपित य, नाट करता है य, उसे पैरों से कुचलता है य, अन्यथा बोले हुये य, लिखे हुये शब्दों द्वारा अवधिनित करता है, उसे छवर्षों की अवधि के लिये मत्रधिकर के लिये ममपहरण से दंडित किय, ज.येग, तथा म.थ ही वह का रावास, जिसकी अवधि तीन वर्षों तक की हो सकेगी, या जुमाने या दोनों में भी दृष्टीय होगा।"

वे समझता हूँ कि सिर्फ दण्ड की भावना से हिन्दुस्तान की जो भावना वित होती जा रही है, वह नहीं सुधरेगी। जब इसको राष्ट्र के कर्णधार लोग संभालेंगे, तभी सुधरेगी। भारत स.कार जब संविधान से निलवाड़ करेगी तो संविधान के प्रति आदर, सम्मान नहीं होगा। अगर हम चाहते हैं कि दूसरे हमारा सम्मान करें तो पहले हमें खुद सम्मान करना सीखना पड़ेगा। जब तक हम हमारे संविधान का सम्मान नहीं करेंगे हम दूसरे से उसे सम्मानित नहीं करा सकते। उसी प्रकार से राष्ट्रगान भी है। राष्ट्रगान शब्द आते ही एक बात हमारे अन्तर्करण में यह आनी चाहिये कि हम उठ खड़े हों। इस गान को हम महज द्वाना समझकर नहीं बन्कि हृदय के उद्गार समझकर प्रकट करें। लेकिन आज राष्ट्र-

गान, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र का सविवेशान, राष्ट्र के राष्ट्रभौमा आज राजनीति के शिकार हो गई है। मैं आपके एक बात समरण करा ता चाहूँगा कि मैंकाले ने जब अंग्रेजी को छुरू किया था तो उसने अंग्रेजी को अनिवार्य नहीं किया था वरन् उसने उसकी उपयोगिता बढ़ा दी थी। उसने उसका सम्मान बढ़ा दिया था। भारत की राजभाषा आपने हिन्दी को बना तो दिया लेकिन उसकी उपयोगिता नहीं बढ़ायी। उसका सम्मान नहीं

बढ़ाया। दूर्भाग्य तो आज है कि आप आज उसकी उपयोगिता नहीं बढ़ा पा रहे हैं। उसका सम्मान नहीं कर पा रहे हैं। आप कल्पना करे जब प्रधान मंत्री जी हिन्दी बोलते हैं तो वह भारत की जनता की बाणी या कोटि-कोटि आत्मा की बाणी प्रकट होती है। लेकिन जब अंग्रेजी बोलते हैं तो मन में उदासी छा जाती है कि क्यों अंग्रेजी बोलते हैं। मैं याद कराना चाहूँगा साननीय गोबर्चेव जी के नेत्रीय सभा स्थल पर रसियन में बोले तो हम लोग उम्मीद कर रहे थे कि हमारे प्रधान मंत्री हिन्दी में बोलेंगे। लेकिन वे अंग्रेजी में बोले। अंग्रेजी न तो रूस की भाषा है और न अंग्रेजी पसंद करता है। मुझे याद है कि जब सर्वप्रथम पंडित विजया लक्ष्मी जी वहां राजदूत बन कर गयी तो उन्होंने अपना परिचयपत्र अंग्रेजी में दिया। वह लौटा दिया गया। फिर जब हिन्दी में दिया तो प्रेसिडेंट की हिन्दी सभापति की। उसको भी काट दिया गया। कहा कि वह ठीक नहीं है। तब वहा पूछताछ हुई और राजर्षि टंडन जी ने बताया कि प्रेसिडेंट की हिन्दी राष्ट्रपति होगी। तो वह देश आपकी राजभाषा मुनना चाहता है। आज उस देश के द्विधारी क्या कहते हैं। वे कहते हैं कि हम तो हिन्दी राजभाषा मुनना चाहते हैं, लेकिन भारत से आने वाले प्रतिनिधिगण अंग्रेजी बोलते हैं। हम क्या करे। ऐ पूछना चाहता हूँ कि बाहर विदेश में आपकी पहचान क्या है? आपकी पहचान वहां आवरण में होगी, वेशभूषा से होगी और आपकी बोली में होगी। लेकिन आप अंग्रेजी बोलते हैं, अंग्रेजी कपड़ा पहनते हैं।

[श्री जगदम्बी प्रसाद यादव] .
 तो आपकी पहचान कैसे होगी। आप किस बुनियाद पर भारतीय सविधान की, भारतीय धर्म की, भारतीय गण्डभाषा की या राष्ट्रगान की पहचान बना सकेंगे। क्या अंग्रेजी में राष्ट्रगान करेंगे। क्या अंग्रेजों का झण्डा लेकर चलेंगे। मानवीय उपमध्यक्ष जी, आज भारत पहचाना जाता है भारतीय संस्कृति और भारतीय जीवन-दर्शन के कारण। अगर आज हमारा कोई विद्वान राजनीति पर बोलता है, विज्ञान और टैक्नोलॉजी पर बोलता है तो यूरोप वाले कहते हैं कि यह तुम्हारी कहां है। लेकिन जब वह भारतीय संस्कृति पर बोलना है, भारत के जीवन-दर्शन पर बोलता है तो यूरोप वाले उसको सुनना चाहते हैं, उसको ममझना चाहते हैं, उसको व्यवहार में लाना चाहते हैं। लेकिन हम इस बात को नहीं ममझ पा रहे हैं कि आपकी संस्कृति का प्रचारक कौन है? जो भारतीय संस्कृति को नहीं जानता। यह देश के लिए कितना सम्मान होगा? कितना परिचय बनेगा आपका? किस ग्राधार पर परिचय बनेगा? मैं एक बार राज्यि टड़न जी का भाषण सुन रहा था। उन्होंने कहा कि लोग कहते हैं मिल्टन के पैराडाइज लास्ट का मुकाबला नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं दो पक्षियों की कहना चाहता हूँ, जिन्होंने कभी कलम नहीं पकड़ी—“तिहो के लेहडे नहीं, हँसों की नहीं पांत, लालों की नहीं बोरिया, साधु न चले जमात!” पैराडाइज लास्ट में इन दो पक्षियों का कही जोड़ है क्या? सवाल है कि अगर जोड़ हो भी तो क्या उस में गंगा की कलकल सुनायी देगी? क्या उसमें मलराचल की गंदाकिनी समीर मिलेगी? क्या उसमें भारत की संस्कृति और वायु मिलेगी? क्या उसमें यहा की परम्परा मिलेगी? अंग्रेजी सीखने के लिये हो सकती है, लेकिन मैं पूछना चाहता हूँ कि दिल्ली में 2000 अंग्रेजी मीडियम के स्कूल खुले हुए हैं। आज इन दो हजार स्कूलों का आप देखने जायें तो वहाँ राज भाषा के खिलाफ कितना अध्रद्र व्यवहार किया जाता है यह आप को देखने को मिलेगा। यहाँ तक कि दीवारों पर भी उस के खिलाफ

लिखा जाता है। क्या आज अंग्रेजी के मैकाले के समय से भी अधिक उपयोगित नहीं बढ़ी है। मैकाले भी अगर कव्र में निकल कर देखे तो कहेगा कि मैंने तो इतना नहीं सोचा था कि भारतवर्ष, आजादी के 40 वर्ष के बाद भी अंग्रेजी भाषा का इतना गलाम बना रहेगा। आप विचार कर के देखे। 40 वर्ष की आजादी का उत्सव जब मनाया जा रहा था तो मुझे दुख हुआ यह देख कर कि हमारे देश के मूर्धन्य नेता गण्डभाषा में नहीं बोल रहे थे। मैं आपका स्मरण कराऊं कि गांधी जी जन-जन के नजदीक कैम पहुँचे। जन-जन को उन्होंने कैसे उद्देलित किया, यह वह तब कर पाये कि जब उन्होंने जन जन की भाषा को स्वीकार किया, अंग्रेजी को नहीं और इसी लिये गांधी जी ने कहा था कि जब हिन्दुस्तान आजाद होगा तो दुनिया को कह दो कि महात्मा गांधी अंग्रेजी नहीं जानता। इसी लिये उन्होंने सावधान किया था कि अंग्रेजों ने भी ज्यादा खतरा हम को अंग्रेजी से है इस लिये कि उसके माय अंग्रेजियत है और अंग्रेजियत एक प्रकार की संस्कृति है जो भारतीय संस्कृति को तोड़ती है और जो शाज भी भारतीय संस्कृति को तोड़ने का प्रयास कर रही है। जो गोपालस्वामी जी बोलते हैं वह अंग्रेजी की देन है। अंग्रेजी की देन पाकिस्तान भी है जो हमसे महात नेता महात्मा गांधी के सारे विरोध के बावजूद उन्होंने बनाया। किस घड़यत्र से वह बनाया गया वह आज छिपा नहीं रहा है और जो कुछ छिपा था वह भी खुल रहा है। तो जब देश भर में यह हालत हो रही है तो मैं पूछना चाहता हूँ कि देश प्रेम की भावना, यहा की एकता और अखडता को कौन जोड़ेगा। भारतवर्ष एक धर्म प्रधान देश था। धर्म और संस्कृति के नाम पर यह जोड़ा जाता था। चारों तरफ चार धार्म मंदिर थे। सभी जजमानों के पुरोहित उन से उन की भाषा मैं ही बात करते थे। रामेश्वर का पटा हमारी भाषा में हम से बात करता है और हमारे यहा गया का पंडा तमिलों में तमिल में बात करता है। वह जोड़े हुए था सब को एक में। लेकिन 40 वर्ष

की आजादी के बाद हम जन संघर्ष की एक भाषा को विकसित नहीं कर पाये। आप छोड़िये राज्यों की बात। मैं पूछना चाहना है कि प्रापकी केन्द्र सरकार क्या कर रही है। आप ने राज भाषा अधिनियम बनाया। 24 वर्ष इस अधिनियम को पारित हुए हो रहे हैं लेकिन उसके आप स्वयं पालन नहीं करते। आपने वार्षिक हिन्दी कार्यक्रम बनाया लेकिन 19 वर्ष में एक वर्ष के भी वार्षिक कार्यक्रम को कार्यान्वित नहीं किया। आप ने हर विभाग में एक राज भाषा कार्यान्वयन समिति बनायी, इप्लीमेटेशन कमटी; लेकिन इस इप्लीमेटेशन कमटी के सदस्यगण अपने कार्यों में हिन्दी अनुभाग को छोड़ दिया जाय तो हिन्दी का व्यवहार एक भी सचिका में नहीं करते। आप दूसरों की बात क्यों करते हैं। आप स्वयं विचार कर देखिये। आप की गहरी मतालय की राज भाषा समिति है। राज भाषा का सचिव वही होता है जो सचिव दूसरे मतालयों में हिन्दी के रास्ते में रोड़ा अटका रहा होता है। वही यहाँ आता है और राज भाषा विभाग राज भाषा विभाग नहीं है, बल्कि सही कहे तो गज भाषा विरोधी विभाग है और उसके बलते यह राज भाषा अधिनियम कार्यान्वित नहीं हो पा रहा है। उक्ता का वार्षिक कार्यक्रम पूरा नहीं होता है और आपका स्वयं बनाया राज भाषा प्रभारी मतालय इस काम में सब से पीछे है। उसकी बैठक हो नहीं जाते और तो और जो प्रापके विभाग को डिस्ट्रिक्टों हैं वह भी पूरों नहीं करते मुझे अफसोस होता है कि मंप्रदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष आपके गृह मंत्री है, लेकिन आज तक राजभाषा के दायालिय को भी उन्होंने नहीं देखा है। उनके चरणों की धूलि भी उस दायालिय में नहीं पहुँच सकी। तो आपका संघर्ष सूत्र का क्या होगा। बाहर आपकी पहचान क्या होगी? जब एक परिवेश में आप होंगे तभी तो आपकी पहचान होगी।

मैं अत मे एक छोटी सी बात कहता हूँ। मैंने इसी परिवेश में यूरोप की यत्ना में देखा कि हिन्दुस्तान, बर्मा, पश्चिमान, श्रीलंका के

लोग वहाँ थे। वे मुझे एक या दो फलाण से देखते हीं दौड़ाउ आते थे। वे देखते थे कि इस आदमी ला परिवेश ऐसा है तो इसको यहाँ भोजन में भी कठिनाई हो सकी है। वे इसलिए लहूते थे कि आज शाम को भोजन आप हमारे गाथ कीजिए। यह भाषा या वेगभूषा को पहचान है। भाषा या वेशभूषा दूसरे देशों के लिए ताज्जुब की बात होती है, लेकिन आज अपने ही देश के लिए यह नज़्र नज़्र लग करण बन रही है। तो आप विचार करेंजिए, सचमुच में यह विधेयक आज के जन्मानुकूल है, प्रासादित है। इसमें सविधान के प्रति सदभाव का, राष्ट्र-धर्म के प्रति उच्च भाव का, राष्ट्रगत के प्रति और भारत की राजभाषा के प्रति सम्मान और सदभाव की बात यहाँ मई है। इसलिए इस विधेयक का आप स्वीकार कर ले जिससे सचमुच में देश के लोगों की अपनी एक स्वतंत्र पहचान हो और हमारा अपना एक शान हो। यह विधेयक इसी स्वतंत्र पहचान को बनाने के लिए दृढ़ सङ्घर्ष है। धन्यवाद।

श्री पशुपति नाथ सुकुल (उत्तर प्रदेश) : आदरण्योंप्रय उपसभाध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम मैं माननीय साथी श्री शिव कुमार मिथ्र जी की ओर से जो यह राष्ट्रीय भावनाओं से ओह-प्रोत विधेयक लाया गया है उसका स्वागत करना है। श्री मिथ्र जी को एक सासद के रूप में बधाई देता है कि राष्ट्र की अखंडता, राष्ट्र के गांधीव को ध्यान में रखकर वे यह विधेयक लाए। एक नारियल के रूप में मे उन्हें धन्यवाद देता हूँ कि वे इस तरह का विधेयक सदन में लाए।

अभी मैं सुन रहा था, ... जो लोल रहे थे, यादव जी बड़ा अच्छा बोलते हैं, और भी कई हमारे साथी बोल रहे थे। लेकिन वे विधेयक पर लम बोले और भाषा पर ज्यादा बोल रहे थे। इन विधेयक में भाषा को कोई स्थान नहीं है। आप इस विधेयक को लेत्तर उम्की धाराओं पर बोलें। लेकिन यहाँ विधेयक पर लम विचार हुआ है।

श्री श्री० सत्यनारायण रेड्डी : मुकुल जी, भारत का गौरव बढ़ाने के जितने भी अंग है, सभी पर कहा जा सकता है। क्या भाषा भारत के गौरव को बढ़ाने की बीज नहीं है?

SHRI V. GOPALSAMY: A country's honour depends on many other things also.

श्री पशुपति नाथ मुकुल : अभी जो संविधान संशोधन विधेयक आया था उसमें हिन्दी का प्रश्न आया था। मैंने उम्हा समर्थन किया था। लेकिन यह तो जो विधेय लाए हैं हमारे मिश्र जी, वह राष्ट्रीय गौरव का, राष्ट्रीय अखंडता को बचाने के लिए लाए हैं...

(व्यवधान) यह जो विधेयक मिश्र जी लाए हैं, इसमें राष्ट्रीय छवज, भारत का संविधान और राष्ट्रगान का अपमान न करने की बात है। उसके साथ-साथ विषटनकारी कियारुलापो की भी चर्चा हई कि अगर देश को कोई खण्डित करता चाहे तो उसको दंडित किया जाये। ये में 4-5 चैरिंग हैं जिसके लिए यह विधेयक लाया गया है। इस विधय में एक कानून पहले से मौजूद हैं और उसका नाम है। Prevention of Insults to National Honour Act, 1971. इस विधेयक में भी मिश्र जी ने इसकी चर्चा की है। 11वीं धारा में यह कहा है कि उस अधिनियम को सन 71 के एतद्वारा निरस्त किया जाता है। दोनों में कर्की यह है कि उसमें राष्ट्रीय अखंडता की चर्चा नहीं है। उसमें केवल राष्ट्रीय छवज, संविधान और राष्ट्रीय गान की चर्चा है। उनको अपमानित करने वालों को दण्ड देने की व्यवस्था है। लेफ्टिनेंट इसमें राष्ट्रीय अखंडता का भी सम्बोध है। इसलिए यह अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। इसमें कोई दो राय नहीं है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, यह एक ऐसे समय में विधय का लाया गया है जब कि हमें अपनी राष्ट्रीय अखंडता पर होने

वाले प्रहरी को देख कर उन्हें बचाने की आवश्यकता महसूस ही रही है। हमारे राष्ट्रीय छवज को जगह-जगह पर जलाया जाता है। कुछ समय पहले कश्मीर में जलाया गया था। पंजाब में 26 जनवरी को, उत्तराधियों ने जलाया था। हमारे तमिलनाडु में संविधान को फाड़ा गया, जलाया गया। इसके लिए तमिलनाडु विधान सभा के अनेक सदस्यों को सदन से निष्कासित किया गया। संविधान का अपमान करने के लिए निष्कासित किया गया था सदन से। विधायक जो शपथ लेते हैं संविधान की अगर वे ही संविधान को जलाने लगें, उस संविधान में दिया गया है कि राष्ट्रीय छवज या राष्ट्रीय गान के महत्व की जो चर्चा है और जो हमारा कर्तव्य है कि हम उनका आदर करें और अगर हम उनका आदर नहीं करते तो हम संविधान के खिलाफ जा रहे हैं, संविधान के खिलाफ कार्य कर रहे हैं। राष्ट्रीय छवज केवल एक कपड़े का टुकड़ा नहीं है, संविधान महज एक कागज का बंडल नहीं है, राष्ट्रीय गान महज एक कविता नहीं है, कस्टोटियंट असेम्बली में 22 जुलाई, 1947 को हमारा जो राष्ट्रीय झड़ा है, राष्ट्रीय छवज है, इसको अपनाया गया था। 22 जुलाई, 1947 को कस्टोटियंट असेम्बली में इसका निर्णय लिया गया था। उस दिन श्री नेहरू जी ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। कई लोग बोले थे। एक चौधरी खलिकउज्जला जो बोले थे . . .

श्री सत्य प्रकाश मल्होदय : आपके प्रदेश के थे वे।

श्री पशुपति नाथ मुकुल : हाँ, आपके प्रदेश के थे वे। मैं उनको कोट करता हूँ।

"I think that from today, everyone, who regards himself as a citizen of India, be he a Muslim, Hindu or Ch-

ristian, will as a citizen make all sacrifices to uphold and maintain the honour of the flag which is accepted and passed as the Flag of India”

ये विचार थे खलिकउज्जला चौधरी साहब के । सबमें अन्त में बोली थी श्रीमती सरोजिनी नायडू । इस राष्ट्रीय ध्वज पर उनके अन्तिम शब्दों को मैं यहाँ कोट कर रहा हूँ ।

"Many of my friends have spoken of this Flag with the poetry of their own hearts. I as a poet and as a woman, am speaking prose to you today when I say that we women stand for the unity of India. Remember, under this Flag there is no prince and there is no peasant, there is no rich and there is no poor. There is no privilege, there is only duty and responsibility and sacrifice, whether we be Hindus or Muslims, Christians, Jains, Sikhs or Zoroastrians and others. Our Mother India has one undivided heart and one indivisible spirit. Men and women of re-born India, rise and salute this Flag. I bid you rise and salute the Flag."

The whole Assembly stood up and saluted the Flag.

इसी भावना से हमारा यह झंडा लाया गया था। संविधान सभा ने उसको अपनाया था। उस दिन दो झंडे दिखाये गये थे सदन में, संविधान सभा में। उसमें एक रेशमी झंडा था और दूसरा खादी का झंडा था। वे दोनों झंडे आज भी हमारे राष्ट्रीय संग्रहालय में रखे हुए हैं जो वहां पेश किए गए थे। यह महत्व था हमारे राष्ट्रीय छवज का। हमारे राष्ट्रीय छवज से ही हमारे देश की पहचान होती है। हिन्दुस्तान के बाहर जब हम जाते हैं जब हम इखते हैं कि हमारा राष्ट्रीय छवज फहरा रहा है तो हम विशेष गौरव का अनुभव करते हैं, आनन्दित और उत्सुक होते हैं। सन् 1982 में पहली बार जब मैं अमेरिका गया था तो उन दिनों हमारे तत्कालीन राष्ट्रपति जल सिंह भी अपने

इलाज के लिए अमेरिका गये हुये थे । उनका इलाज हो चुका था । वे न्यूयार्क के बालडोर्फ आस्टोनिंग हॉटल में ठहरे हुये थे । हम लोग उनसे मिलने के लिए वहा गये थे । वहां पर जब हमने भारत का विशाल झण्डा होटल के बाहर फहराते हुये देखा तो रोमाचित हो गये । जिन-जिन देशों में हम जाते हैं और वहा पर भारत का झण्डा फहराते हुये देखते हैं तो रोमाचित हो उठते हैं । झण्डा हमारे देश का प्रतीक है आज उसी झण्डे को कुछ चन्द सिर-फिरे लोग जलाये, कुचले और पददलित करें । यह बड़ा दुख की बात है । ऐसा वे क्यों करते हैं ? वे झण्डे को नहीं, देश को रोदना चाहते हैं और झण्डे के माध्यम से देश को रोदते हैं क्योंकि झण्डा देश का प्रतीक है । ऐसे लोगों की दुर्भावना और दुष्कर्मों को रोकने के लिए दण्ड की व्यवस्था होनी चाहिये और उनको दण्ड मिलना चाहिये । हमारे मिश्रा जी ने जो प्रस्ताव किया है मैं उसका अनुमोदन करता हूँ । उन्होंने तीन वर्ष से लेकर सात वर्ष की दण्ड की व्यवस्था की है । पहले तीन वर्ष के दण्ड की व्यवस्था थी । अब उन्होंने तीन वर्ष में लेकर सात वर्ष के दण्ड की व्यवस्था करने का प्रस्ताव किया है । मैं बिलकुल इससे एधी करता हूँ, इसको स्वीकार करता हूँ । इतना दण्ड तो उनको अवश्य मिलना चाहिये । जैसा हमारा झण्डा है, वैसा ही हमारा संविधान है । हमारी समझ में नहीं आता कि हमारे तमिलनाडु के लोग संविधान की प्रतियों को क्यों फाड़ते हैं और जलाते हैं ? हमारे श्री गोपालसामी जी ने भी संविधान की प्रतियों को फाड़ा और जलाया है . . . (व्यवधान) ।

SHRI V. GOPALSAMY: I will explain that when my turn comes.

SHRI P. N. SUKUL: You cannot explain. That is why they have been dismissed from the Assembly.

SHRI V. GOPALSAMY: We don't care about it.

SHRI P. N. SUKUL: That is an irresponsible attitude.

SHRI V. GOPALSAMY: That is arrogance on their part.

SHRI P. N. SUKUL: That is the regard that you have for your Constitution.

SHRI V. GOPALSAMY: We will face any consequences on that count.

SHRI P. N. SUKUL: It is a shameful thing.

SHRI V. GOPALSAMY: You should be ashamed.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL (Punjab) All of us should be ashamed of that act of yours.

श्री पशुपति नाथ सूक्त : संविधान ने आपका क्या बिगड़ा है। हमारे देश में लोकतंत्र है। आप संविधान को बदल सकते हैं। अगर आपके साथ लोक शक्ति है तो आप उस शक्ति का इस्तेमाल करके संविधान को बदल सकते हैं, उसमें परिवर्तन ला सकते हैं। उसको जलाते क्यों हैं? आपके घर में कोई गडबड़ है तो आप उसका ठीक कीजिए, घर की व्यवस्था को ठीक कीजिए।

श्री राम अवधेश सिंह : जो संविधान के प्रावधानों को लागू नहीं करते हैं वे संविधान का ज्यादा अपमान करते हैं।

श्री पशुपति नाथ सूक्त : संविधान का अपमान करने वालों के डिलाफ दण्ड की पूरी व्यवस्था होनी चाहिये। इस बात की आज नितान्त आवश्यकता है कि आजादी के चालीस वर्ष के बाद तो कभी से कम हम अपने संविधान और राष्ट्रधर्वज और अपने राष्ट्रगान का सम्मान करें, उनका सम्मान करना सीखें। अभी तो हमको सीखना है। यहा बैठने के बाद भी अगर हमें सीखने की आवश्यकता है तो मैं समझता हूँ कि इससे बड़ी दयनीय स्थिति क्या हो सकती है, इससे बड़ी चिन्तनीय स्थिति क्या होगी? पिछले साल क्या हुआ? केरल में एक स्कूल के तीन छात्रों ने राष्ट्रगान गाने से भना कर दिया। उन्होंने कहा कि हम राष्ट्रगान नहीं गानें। ये इसाई धर्म के एक

विशेष सम्प्रदाय के छात्र थे। इस सम्प्रदाय के लोग विश्व भर में फैल हुये हैं। इस सम्प्रदाय का नियम है कि वे किसी भी देश में राष्ट्रगान को नहों गते हैं। भारत में ही नहीं, विश्व भर में जहां-जहां भी वे हैं, वहां पर उनका यह नियम है। इस सम्प्रदाय को फेथ आफ जैन्होवांज विटनेस कहते हैं।

श्री रामचन्द्र विकल (उत्तर प्रदेश) : वह स्कूल कोटि से है?

श्री पशुपति नाथसूक्त : वह केरल में है। केरल के शिक्षा विभाग के महानिदेशक ने उन तीन छात्रों को कलेज से निकाल दिया। उसके बाद वे छात्र हाई कोर्ट में गये और केरल हाई कोर्ट ने भी जो शिक्षा महानिदेशक का निर्णय था, और उनके द्वारा दिया गया दण्ड था उसको उचित ठहराया, वैध ठहराया और वही निर्णय लिया गया कि उनको निकाल दिया जाना चाहिये जिन्होंने राष्ट्रगान गाने से भना किया। उसके बाद फिर अपील हुई सर्वोच्च न्यायालय में और सर्वोच्च न्यायालय ने केरल हाई कोर्ट के निर्णय को उलट दिया। उन्होंने कहा कि आप किसी को राष्ट्रगान गाने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। जो वर्तमान संविधान व्यवस्था है, जो वर्तमान कानून है उसके अनुसार आप किसी को जबरदस्ती राष्ट्रीय गान गाने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। अगर राष्ट्रीय गान होता है और आदनी खड़े हो जाते हैं और अगर कोई व्यक्ति चुपचाप रहता है, नहीं गाता है तो आप उसको यह नहीं कह सकते कि उसने गैर-कानूनी काम किया है। यह जो सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय है उसकी मैं एक लाइन यहां कोट कर रहा हूँ: There is no provision of law which obliges anyone to sing the National Anthem, if a person who stands up respectfully when the National Anthem is sung does not join the singing."

यह सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय है कि अगर वह खड़ा हो जाता है और राष्ट्रगान नहीं गाता है तो हम उसको इसके लिए बाध्य नहीं कर सकते। इसलिए आज जरूरी है कि हम इस कानून को बदलें।

श्री सत्य प्रकाश मालविया : प्रधान मंत्री जी ने लोक सभा में जो आश्वासन दिया था उसका क्या हुआ ? सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद जो निर्णय दिया जा . . .

श्री पशुपति नाथ सुकुल : मैं बता रहा हूँ। आपको शायद मालूम नहीं है कि अटार्नी जनरल और तीन दूसरे लोगों ने रिट आफ मैं डमस फाइल कर दिया है सुप्रीम कोर्ट में और सुप्रीम कोर्ट की लार्जर बैच, बड़ी पीठ इस विषय पर पुनर्विचार कर रही है और यह मैटर आलरडी कोर्ट के पास पेंडिग है। . . . (व्यवधान) . . .

श्री पवन कुमार बांसल : मैटर पेंडिग है। . . . (व्यवधान) . . .

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: You can amend the law.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: The question is of proper interpretation of law. Proper interpretation of the existing law is required and nothing else.

पूरा मामला सुप्रीम कोर्ट के पास पेंडिग है। . . . (व्यवधान) . . . अमेडमेट कैसे होगा ? आप पूरी बात को समझने की कोशिश करिए।

श्री पशुपति नाथ सुकुल : हमारे प्रधान मंत्री जी ने अभी लोक सभा में जो कहा वह मैं आपके सुना रहा हूँ। उन्होंने क्या कहा ?

श्री पवन कुमार बासल : सरकार ने रिब्यू इपलीकेशन फाइल करवाया है।

श्री पशुपति नाथ सुकुल : I quote the words of Prime Minister Rajiv Gandhi:

"These symbols, in a sense, embody the soul and the spirit of the nation. They are and they must be sacred to us. And they are an integral part of our freedom, of our unity. They have come out of freedom struggle. They are the symbols of free India today."

These are his words, these are his sentiments, these are his feelings, and this is the attitude of our Government.

लेकिन जो भी फैसला सर्वोच्च न्यायालय से हो जाता है तो उस पर पुनर्विचार की आवश्यकता अगर महसूस की जाती है और अगर उसका स्कोप भी है, गुंजाइश भी है तो उसको रेफर किया जाता है। अटार्नी जनरल और दूसरे लोगों ने उसको रेफर किया है।

उसके बाद जरूरत हुई तो कानून भी बदला जा सकता है। हमारे मिश्रा जी यह बिल लाये हैं और वे चाहते हैं यह कानून का जामा पहने और वे इसको पास करवाना चाहते हैं। इस बिल के पीछे जो भावना है इस पर हमारे जितने साथी बौले हैं वह है वे इस स ईड के बौले हो हैं वह है उस साइड के बोले हैं सबने इस विधेयक की भावना का समर्थन किया है और इस आवश्यकता पर बल दिया है कि जो भी हमारे राष्ट्रीय महत्व को चौंजे हैं जेसे राष्ट्र य गान है, संविधान है राष्ट्र य ध्वज है उनका अगर कोई अपमान करता है तो उसको समुचित दंड मिलना चाहिये। आपको याद होगा कि राष्ट्रीय गान, 1950—60 में सिनेमा हालों में गाया जाता था। कहीं पिक्चर शूब्ह इन्हें के पहले और कहीं पर खत्म होने पर। मैंने स्वयं देखा है कि कुछ लोग खड़े हैं। जाते थे और कुछ बैठे रहते थे और तभी उसको बन्द किया गया। . . . (व्यवधान) . . . कुछ लोग खड़े होते थे और बहुत से बैठे रहते थे। (समय की घंटी)

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच. हनुमनतप्पा) : बद कीजिए, समय हो गया।

श्री पशुपति नाथ सुकुल : अगली बार मुझे मौका दें।

5 P.M.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): This discussion will continue next time. Now, Mr. Gadavi to lay the paper.